अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक
जुलाई-सितम्बर, 2003
दस रुपये

जुलाई-अगस्त-सितम्बर की कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

23 जुलाई (1906)

महान क्रान्तिकारी , हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन के कमाण्डर-इन-चीफ अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद का जन्म दिवस।

23 जुलाई (1802)

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक, 'थ्री मस्कीटियर्स', 'काउंट आफ मांटे क्रिस्टो', 'आपल हरे' जैसे उपन्यासों के रचयिता अलेक्जेंडर ड्यूमा का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1880)

महान कथाकार, भारतीय जनता के दुख-दर्द, आशाओं और सपनों को अपनी कलम के माध्यम से सामने लाने वाले कलम के सिपाही प्रेमचन्द का जन्मदिवस।

31 जुलाई (1940)

शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस-

अंग्रेजों द्वारा 1919 में जलियांवाला बाग में आम निहत्थी जनता पर बर्बर हत्याकाण्ड के प्रत्यक्षदर्शी बालक ऊध मसिंह ने हत्यारों को सजा देने का संकल्प बांधा था। देश की बेगुनाह जनता के हत्यारों का सरगना जनरल सर माइकल ओडवायर था और गोलियां चलवाई थीं जनरल डायर ने। ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड जाकर लगभग 20 वर्षों बाद हत्यारे से बदला लिया। भेष बदले ऊधमसिंह ने इंग्लैण्ड के कैंग्स्टन हाल में भरी सभा में सर माइकल ओडवायर को गोलियों से भून दिया। ऊधमसिंह गिरफ्तार हो गये और अंग्रेज जालिमों ने इसी दिन उन्हें फांसी की सजा दे दी।

6 अगस्त (1945)

हिरोशिमा दिवस। मानवता के इतिहास में एक काला दिन। इसी दिन अमरीका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला अणु बम गिराया। जिसमें लाखों लोग मारे गये, पूरा शहर तबाह हो गया, कई पीढ़ियों तक बच्चे विकलांग पैदा होते रहे। तीन दिन बाद 9 अगस्त को नागासाकी पर ऐसा ही बम गिराया गया।

9 अगस्त (1942)-

अगस्त क्रान्ति दिवस। सारा कांग्रेसी नेतृत्व गिरफ्तार था। पर नौजवानों के नेतृत्व में जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी। बच्चे-बच्चे की जुबान पर था—'अंग्रेजों भारत छोड़ो!' ब्रिटिश हुकूमत की जड़ें कांप गई। देश के कई हिस्सों में हफ्तों तक ब्रिटिश शासन को उखाड़कर आज़ाद सरकार कायम रही।

11 अगस्त (1908)

खुदीराम बोस का शहादत दिवस

बंगाल के इस युवा क्रान्तिकारी को ब्रिटिश साम्राज्यवादी हुकूमत ने फांसी की सजा दे दी थी। इस बहादुर इंक़लाबी की उम्र उस वक़्त महज 19 वर्ष की थी। आज़ादी के दीवाने खुदीराम बोस ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूम लिया था।

15 अगस्त (1947)

स्वतंत्रता दिवस। हज़ारों-हज़ार लोगों की कुर्बानियों और जनता के लम्बे संघर्ष के बाद इसी दिन देश को आज़ादी मिली। लेकिन यह आज़ादी अधूरी है। सच्ची आज़ादी तब मिलेगी जब सबको शिक्षा, रोजगार और बराबरी का दर्जा मिलेगा।

24 अगस्त (1908)

शहीदेआज़म भगतसिंह के अनन्य सहयोगी, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु (राजगुरु के नाम से विख्यात) का जन्म पूना (महाराष्ट्र) के खेड़ा (वर्तमान में राजगुरु नगर) में 1908 में हुआ था।

28 अगस्त (1828)

महान रूसी उपन्यासकार, 'युद्ध और शान्ति, 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे विख्यात उपन्यासों के रचयिता लेव तोलस्तोय का जन्मदिवस।

29 अगस्त(1979)

प्रसिद्ध बांग्ला क्रान्तिकारी कवि नज़रूल इस्लाम की पुण्यतिथि।

13 सितम्बर (1930)

यतीन्द्रनाथ दास का शहादत दिवस। ब्रिटिश हुकूमत की जेल में राजनीतिक बंदियों के अधिकारों के लिए अनशन करते हुए सरकार पर दबाव डालने के लिए पानी पीना तक छोड़ दिया। 63 दिन के अनशन के बाद यतीन्द्रनाथ ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी।

16 सितम्बर (1904)

क्रांतिकारी वीर सपूत शहीद महावीर सिंह का जन्म एटा जिला (उत्तर प्रदेश) के शाहपुर टहला में 1904 में हुआ था।

25 सितम्बर (1881)

चीन के महान लेखक लू शुन का जन्मदिवस। चीनी जनता के हृदय में उनका वही स्थान है जो भारत में प्रेमचंद का है।

27 सितम्बर (1907)

शहीदेआज़म भगतसिंह का जन्मदिवस।

अनुराग
बाल पत्रिका

त्रैमासिक, वर्ष 8, अंक 3, जुलाई-सितम्बर 2003

सम्पादक
कमला पाण्डेय

सह सम्पादक
अभिनव सिन्हा

सज्जा
रामबाबू

स्वत्वाधिकारी कमला पाण्डेय के लिए यशकरण लाल द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा मुद्रक बाबूराव बोरकर द्वारा शान्ति प्रेस, नयागांव (पश्चिम), लखनऊ से मुद्रित।

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : (0522) 2786782

इस अंक का मूल्य : दस रुपए
वार्षिक सदस्यता: अड़तालीस रुपए
(डाक व्यय सहित)

इस अंक में

संवाद

प्यारे बच्चों,

जुलाई के साथ ही तुम्हारा पढ़ाई का सत्र भी शुरू हो गया। नयी कक्षा, नया माहौल और नये–पुराने दोस्तों से मिलने की ललक छलकी पड़ रही है। छुट्टियों के अनुभव बांटने और मिल–जुल कर घूमने, बतियाने की खुशी मन में समा नहीं रही। और अब जाना है बाज़ार–नई ड्रेस के साथ नया बस्ता, कलरफुल पेंसिल, एक–आध पेन और जेमेट्री बाक्स के अलावा कॉपिया भी तो खरीदनी हैं। ओह! शाम हो गई, समय का पता ही नहीं चला, जैसे उड रहा है...किताबों की लिस्ट का कागज देखते ही अचानक मुँह से निकल पड़ा –अरे यह क्या? सारी किताबें बदल गईं? कोर्स बदल गया?... नहीं–नहीं कुछ बदली हैं– बड़े भैया की किताबों से काम नहीं चलेगा, एक और खर्च मम्मी–पापा करें। इसी तरह तुम्हारे और साथी भी सोच रहे हैं, कुछ बड़े क्लास के बच्चे एक दूसरे से पूछ भी रहे हैं। नये–पुराने कोर्स का मिलान कर रहे हैं। कोर्स बदल गया? इतनी बढ़िया कहानी–लिखने वाले प्रेमचन्द की निर्मला क्यों बदली? बताओ? पता नहीं!

बच्चों! यह पता तो तुम्हें ही लगाना चाहिए। 31 जुलाई 2003 प्रेमचन्द की 123 वीं जयन्ती की तिथि है। *'अनुराग'* ने इस महान कथाकार की जयन्ती पर बच्चों की एक कहानी प्रतियोगिता भी आयोजित की। तुम भी इनकी कहानियाँ पढ़कर देखो–सदियों से समाज द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत जन–मन की अकथनीय पीड़ा का कैसा मार्मिक चित्रण उन्होंने किया है। प्रेमचन्द की कहानियों और उपन्यासों के पात्र शोषित समाज के हैं। जो हमारे चारों और फैले हुए हैं, वे व्याकुलता से तुम्हें निहार रहे हैं– वे कह रहे है, आओ बच्चों! हमारी पीड़ा समझो, हमारी कहानी लिखो–प्रेमचन्द के उत्तराधिकारी बनों।

ढेर सारे प्यार और शुभकामनाओं के साथ
–तुम्हारी नानी
कमला पाण्डेय

पोस्ट बाक्स

महोदया,

पिछले दिनों लखनऊ आया था। सो हज़रतगंज में आपकी त्रैमासिक **अनुराग** का अक्टूबर–दिसम्बर' 02 अंक देखने का अवसर मिला। इसमें दो राय नहीं कि आज बच्चों के लिए पत्रिकाओं का अभाव–सा हो गया है जबकि शिक्षा के प्रसार–प्रचार का शोर ढोंग के रूप में बढ़ता ही जा रहा है। बच्चों की रुचि पढ़ने की ओर से हटती जा रही है, मैं यह नहीं मानता और इसे न मानने के मेरे पास ठोस आधार हैं। मेरी पुस्तकों की बिक्री संख्या सबसे बड़ा सबूत हैं। अस्तु!

बच्चों में इस ओर रुचि पैदा करना या इसे बढ़ावा देना हमारी जिम्मेदारी है और इस दिशा में आपका यह प्रयास सराहनीय है। पूरी पत्रिका तकनीकी दृष्टि से सन्तुष्ट कर गई। कला पक्ष सबल है जो बच्चों के क्षेत्र के लिए एक प्राथमिक आवश्यकता है। इसके लिए आप और रामबाबू जैसे आपके सहयोगी साधुवाद के पात्र हैं।

मैं इसी क्षेत्र का व्यक्ति हूँ। शायद नाम आपने सुना हो। अपनी पत्रिका में मुझसे किसी प्रकार के लेखन--कला संबंधी सहयोग की अपेक्षा हो तो अवश्य कहें।

शुभकामनाओं के साथ
आइवर यूशिएल

कहानी

मृतक-भोज

○ प्रेमचन्द

सेठ रामनाथ ने रोग-शय्या पर पड़े-पड़े निराशापूर्ण दृष्टि से अपनी स्त्री सुशीला की ओर देखकर कहा—मैं बड़ा अभागा हूँ शीला। मेरे साथ तुम्हें सदैव ही दुख भोगना पड़ा। जब घर में कुछ न था, तो दिन-रात गृहस्थी के धन्धों और बच्चों के लिए मरती थीं। अब जरा कुछ सँभला और तुम्हारे आराम करने के दिन आये, तो यों छोड़े चला जा रहा हूँ। आज तक मुझे आशा थी, पर आज वह आशा टूट गयी। देखो शीला, रोओ मत। संसार में सभी मरते हैं, कोई दो साल आगे, कोई दो साल पीछे। अब गृहस्थी का भार तुम्हारे ऊपर है। मैंने रुपये नहीं छोड़े, लेकिन जो कुछ है, उससे तुम्हारा जीवन किसी तरह कट जायगा...यह राजा क्यों रो रहा है?

सुशीला ने आँसू पोंछकर कहा-जिद्दी हो गया है और क्या। आज सबेरे से रट लगाये हुए है कि मैं मोटर लूँगा। 5 रु. से कम में आयेगी मोटर?

सेठजी को इधर कुछ दिनों से बालकों पर बहुत स्नेह हो गया था। बोले—तो मँगा दो न एक। बेचारा कब से रो रहा है। क्या-क्या अरमान दिल में थे। सब धूल में मिल गये। रानी के लिए विलायती गुड़िया भी मँगा दो, दूसरों के खिलौने देखकर तरसती रहती है। जिस धन को प्राणों से भी प्रिय समझा वह अन्त को डाक्टरों ने खाया। बच्चे मुझे क्या याद करेंगे कि बाप था। अभागे बाप ने तो धन को लड़के-लड़की से प्रिय समझा। कभी पैसे की चीज भी लाकर नहीं दी।

अन्तिम समय जब संसार की असारता कठोर सत्य बनकर आँखों के सामने खड़ी हो जाती है, तो जो कुछ न किया उसका खेद और जो कुछ किया उस पर पश्चात्ताप, मन को उदार और निष्कपट बना देता है।

सुशीला ने राजा को बुलाया और उसे छाती से लगाकर रोने लगी। वह मातृस्नेह, जो पति की कृपणता से भीतर-ही-भीतर तड़पकर रह जाता था, इस समय जैसे खौल उठा, लेकिन मोटर के लिए रूपये कहाँ थे।

सेठजी ने पूछा— मोटर लोगे बेटा, अपनी अम्माँ से रुपये लेकर भैया के साथ चले जाओ। खूब अच्छी मोटर लाना।

राजा ने माता से आँसू और पिता का यह स्नेह देखा, तो उसका बालहठ जैसे पिघल गया। बोला— अभी नहीं लूँगा।

सेठजी ने पूछा—क्यों?

'जब आप अच्छे हो जायँगे तब लूँगा।'

सेठजी फूट-फूटकर रोने लगे।

2

तीसरे दिन सेठ रामनाथ का देहान्त हो गया।

धनी के जीने से दु:ख बहुतों को होता है, सुख थोड़ों को। महाब्राह्मणों की मंडली अलग सुखी है, पंडितजी अलग खुश हैं, शायद बिरादरी के लोग भी प्रसन्न हैं, इसलिए कि एक बराबर का आदमी कम हुआ। दिल से एक काँटा दूर हुआ। और पट्टीदारों का तो पूछना ही क्या। अत: वह पुरानी कसर निकालेंगे। हृदय को शीतल करने का ऐसा अवसर बहुत दिनों के बाद मिला है।

आज पाँचवा दिन है। वह विशाल भवन सूना

पड़ा है। लड़के न रोते हैं, न हँसते हैं। मन मारे माँ के पास बैठे हैं और विधवा भविष्य की अपार चिन्ताओं के भार से दबी हुई निर्जीव-सी पड़ी है। घर में जो रुपये बच रहे थे। वे दाहक्रिया की भेंट हो गये और अभी सारे संस्कार बाकी पड़े हैं। भगवान, कैसे बेड़ा पार लगेगा।

किसी ने द्वार पर आवाज दी। महरा ने आकर सेठ धनीराम के आने की सूचना दी। दोनों बालक बाहर दौड़े। सुशीला का मन भी एक क्षण के लिए हरा हो गया। सेठ धनीराम बिरादरी के सरपंच थे। अबला का क्षुब्ध हृदय सेठजी की इस कृपा से पुलकित हो उठा। आखिर बिरादरी के मुखिया हैं। ये लोग अनाथों की खोज खबर न लें, तो कौन ले। धन्य हैं ये पुण्यात्मा लोग, जो मुसीबत में दोनों की रक्षा करते हैं।

यह सोचती हुई सुशीला घूँघट निकाले बरोठे में आकर खड़ी हो गयी। देखा तो धनीरामजी के अतिरिक्त और भी कई सज्जन खड़े थे।

धनीराम बोले–बहूजी, भाई रामनाथ की अकाल मृत्यु से हम लोगों का जो दुःख हुआ है, वह हमारा दिल ही जानता है। अभी उनकी उम्र ही क्या थी, लेकिन भगवान की इच्छा। अब तो हमारा यही धर्म है कि ईश्वर पर भरोसा रखें और आगे के लिए कोई राह निकालें। काम ऐसा करना चाहिए कि घर की आबरू भी बनी रहे और भाईजी की आत्मा भी संतुष्ट हो।

कुबेरदास ने सुशीला को कनखियों से देखते हुए कहा–मर्यादा बड़ी चीज है। उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। लेकिन कमली के बाहर पाँव निकालना भी तो उचित नहीं। कितने रुपये हैं तेरे पास, बहू? क्या कहा, कुछ नहीं?

सुशीला–घर में रुपये कहाँ हैं, सेठजी। जो थोड़े बहुत थे, वह बीमारी में उठ गये।

धनीराम-तो यह नयी समस्या उठ खड़ी हुई। ऐसी दशा में हमें क्या करना चाहिए, कुबेरदासजी?

कुबेरदास-जैसे हो, भोज तो करना ही पड़ेगा। हाँ, अपनी सामर्थ्य देखकर काम करना चाहिए। मैं कर्ज लेने को न कहूँगा। हाँ, घर में जितने रुपयों का प्रबन्ध हो सके, उसमें हमें कोई कसर

न छोड़नी चाहिए। मृत जीव के साथ भी तो हमारा कुछ कर्तव्य है। अब तो वह फिर कभी न आयेगा, उससे सदैव के लिए नाता टूट रहा है। इसलिये सब कुछ हैसियत के मुताबिक होना चाहिए। ब्राह्मणों को खिलाना ही पड़ेगा ताकि मर्यादा का निर्वाह हो।

धनीराम– तो क्या तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, बहू जी? दो–चार हजार भी नहीं!

सुशीला– मैं आपसे सत्य कहती हूँ, मेरे पास कुछ नहीं है। ऐसे समय झूठ बोलूँगी?

धनीराम ने कुबेरदास की ओर अर्ध-अविश्वास से देखकर कहा–तब तो यह मकान बेचना पड़ेगा।

कुबेरदास–इसके सिवा और क्या हो सकता है। नाक कटाना तो अच्छा नहीं। रामनाथ का कितना नाम था, बिरादरी के स्तंभ थे। यही इस समय एक उपाय है। 20 हज़ार मेरे आते हैं। सूद-बट्टा लगाकर कोई 25 हज़ार मेरे हो जायँगे। बाकी भोज में खर्च हो जायगा। अगर कुछ बच रहा, तो बाल-बच्चों के काम आ जायगा।

धनीराम– आपके यहाँ कितने पर घर बंधक रखा था?

कुबेरदास-20 हज़ार पर। रुपये सैकड़े सूद।

धनीराम–मैंने तो कुछ कम सुना है।

कुबेरदास-उसका तो रेहननामा रखा है। जबानी बात-चीत थोड़े ही है। मैं दो चार हज़ार के लिए झूठ

नहीं बोलूँगा।

धनीराम–नहीं-नहीं, यह मैं कब कहता हूँ। तो तूने सुन लिया, बाई! पंचों की सलाह है कि मकान बेच दिया जाय।

सुशीला का छोटा भाई संतलाल भी इसी समय आ पहुँचा। यह अन्तिम वाक्य उसके कान में पड़ गया। बोल उठा–किसलिए मकान बेच दिया जाय? बिरादरी के भोज के लिए? बिरादरी तो खा-पीकर राह लेगी, इन अनाथों की रक्षा कैसे होगी? इनके भविष्य के लिए भी तो कुछ सोचना चाहिए।

धनीराम ने कोप-भरी आँखों से देखकर कहा–आपको इन मामलों में टाँग अड़ाने का कोई अधिकार नहीं। केवल भविष्य की चिन्ता करने से काम नहीं चलता। मृतक का पीछा भी किसी तरह सुधारना ही पड़ता है। आपका क्या बिगड़ेगा। हँसी तो हमारी होगी। संसार में मर्यादा से प्रिय कोई वस्तु नहीं मर्यादा के लिए प्राण तक दे देते हैं। जब मर्यादा ही न रही, तो क्या रहा। अगर हमारी सलाह पूछोगे, तो हम यही कहेंगे। आगे बाई का अख्तियार है, जैसा चाहे करें, पर हमसे कोई सरोकार न रहेगा। चलिए कुबेरदासजी, चलें।

सुशीला ने भयभीत होकर कहा– भैया की बातों का विचार न कीजिए, इनकी तो यह आदत हैं मैंने तो आपकी बात नहीं टाली, आप मेरे बड़े हैं। घर का हाल आपको मालूम है। मैं अपने स्वामी की आत्मा को दु:खी करना नहीं चाहती, लेकिन जब उनके बच्चे ठोकरें खायेंगे, तो क्या उनकी आत्मा दुखी न होगी? बेटी का ब्याह करना ही है। लड़के को पढ़ाना-लिखाना है ही। ब्राह्मणों को खिला दीजिए, लेकिन बिरादरी करने की मुझमें सामर्थ नहीं है।

दोनों महानुभावों को जैसे थप्पड़ लगा–इतना बड़ा अधर्म! भला ऐसी बात भी जबान से निकाली जाती है। पंच लोग अपने मुँह में कालिख न लगने देंगे। दुनिया विधवा को न हँसेगी, हँसी होगी पंचों की। यह जग-हँसाई वे कैसे सह सकते हैं। ऐसे घर के द्वार पर झाँकना भी पाप है।

सुशीला रोकर बोली–मैं अनाथ हूँ, नादान हूँ, मुझ पर क्रोध न कीजिए। आप लोग ही मुझे छोड़ देंगे, तो मेरा कैसे निर्वाह होगा।

इतने में दो महाशय और आ बिराजे। एक बहुत मोटे और दूसरे बहुत दुबले। नाम भी गुणों के अनुसार ही–भीमचन्द और दुर्बलदास। धनीराम ने संक्षेप में यह परिस्थिति उन्हें समझा दी। दुर्बलदास ने सहृदयता से कहा–तो ऐसा क्यों नहीं करते कि हम लोग मिलकर कुछ रुपये दे दें। जब इसका लड़का सयाना हो जायगा, तो रुपये मिल ही जायँगे। अगर न भी मिलें, तो एक मित्र के लिए कुछ बल खा जाना कोई बड़ी बात नहीं है।

संतलाल ने प्रसन्न होकर कहा–इतनी दया आप करेंगे तो क्या पूछना।

कुबेरदास त्योरी चढ़ाकर बोले–तुम तो बे-सिर-पैर की बातें करने लगे, दुर्बलदास जी। इस बखत के बाजार में किसके पास फालतू रुपये रखे हुए हैं।

भीमचंद–सो तो ठीक है, बाज़ार की ऐसी मंदी तो कभी देखी नहीं, पर निबाह तो करना चाहिए।

कुबेरदास अकड़ गये। वह सुशीला के मकान पर दाँत लगाये हुए थे। ऐसी बातों से उनके स्वार्थ में बाधा पड़ती थी। बस अपने रुपये अब वसूल करके छोड़ेंगे। औरतों के झमेले में नहीं पड़ेंगे।

भीमचन्द ने उन्हें किसी तरह सचेत किया, लेकिन भोज तो देना ही पड़ेगा। उस कर्त्तव्य का पालन न करना समाज की नाक कटाना है।

सुशीला ने दुर्बलदास में सहृदयता का आभास देखा। उनकी ओर दीन नेत्रों से देख कर बोली–मैं आप लोगों से बाहर थोड़े ही हूँ। आप लोग मालिक हैं, जैसा उचित समझें वैसा करें।

दुर्बलदास– तेरे पास कुछ थोड़े-बहुत गहने तो होंगे, बाई?

'हाँ गहने हैं। आधे तो बीमारी में बिक गये, आधे बचे हैं। सुशीला ने सारे गहने लाकर पंचों के सामने रख दिये, पर यह तो मुश्किल से तीन हज़ार में ही उठेंगे।

दुर्बलदास ने पोटली को हाथ से तौलकर कहा–तीन हज़ार को कैसे जायेंगे। मैं साढ़े तीन हज़ार दिला दूंगा। भीमचन्द ने फिर पोटली को तौलकर कहा–मेरी बोली चार हज़ार की है।

कुबेरदास को मकान की बिक्री का प्रश्न

छेड़ने का अवसर फिर मिला–चार हज़ार ही में क्या हुआ जाता है। बिरादरी का भोज है या दोष मिटाना है। बिरादरी में कम-से-कम दस हज़ार का खरचा है। मकान तो निकालना ही पड़ेगा।

संतलाल ने ओंठ चबाकर कहा– मैं कहता हूँ, आप लोग क्या इतने निर्दयी है! आप लोगों को अनाथ बालकों पर दया नहीं आती! क्या उन्हें रास्ते का भिखारी बना कर छोड़ेंगे।

लेकिन संतलाल की फरियाद पर किसी ने ध्यान न दिया। मकान की बातचीत अब नहीं टाली जा सकती थी। बाजार मंदा है। 30 हज़ार से बेसी नहीं मिल सकते, 25 हज़ार तो कुबेरदास के हैं। पाँच

हज़ार बचेंगे। चार हज़ार गहनों से आ जायेंगे। इस तरह 9 हज़ार में बड़ी किफ़ायत से ब्रह्म-भाज और बिरादरी भोज दोनों निपटा दिये जायेंगे।

सुशीला ने दोनों बालकों को सामने करके करबद्ध होकर कहा–पंचों, मेरे बच्चों का मुँह देखिए। मेरे घर में जो कुछ है, वह आप सब ले लीजिए; लेकिन मकान छोड़ दीजिए–मुझे कहीं ठिकाना न मिलेगा। मैं आपके पैरों पड़ती हूँ, मकान इस समय न बेचें।

इस मूर्खता का क्या जवाब दिया जाय। पंच लोग तो खुद चाहते थे कि मकान न बेचना पड़े। उन्हें अनाथों से कोई दुश्मनी नहीं थी, किन्तु बिरादरी का भोज और किसी तरह किया जाय। अगर विधवा कम-से-कम पाँच हज़ार का जोगाड़ और कर दे, मकान बच सकता है, पर जब वह ऐसा नहीं कर सकती, तो मकान बेचने के सिवा और तो कोई उपाय नहीं।

कुबेरदास ने अन्त में कहा–देख बाई, बाजार की दशा इस समय खराब है। रुपये किसी से उधार नहीं मिल सकते। बाल-बच्चों के भाग में लिखा होगा, तो भगवान और किसी हीले से देगा। हीले रोजी, बहाने मौत। बाल-बच्चों की चिन्ता मत कर। भगवान जिसको जन्म देते हैं, उसकी जीविका की जुगत पहले ही से कर देते हैं। हम तुझे समझा कर हार गये। अगर तू अब भी अपना हठ न छोड़ेगी, तो हम बात भी न पूछेंगे। फिर यहाँ तेरा रहना मुश्किल हो जायगा। शहर वाले तेरे पीछे पड जायेंगे।

विधवा सुशीला अब और क्या करती। पंचों से लड़कर वह कैसे रह सकती थी। पानी में रहकर मगर से कौन बैर कर सकता है। घर में जाने के लिए उठी पर वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ी। अभी तक आशा सँभाले हुई थी। बच्चों के पालन-पोषण में वह अपना वैधव्य भूल सकती थी, पर अब तो अंधकार था चारों ओर।

3

सेठ रामनाथ के मित्रों का उनके घर पर पूरा अधिकार था। मित्रों का अधिकार न हो तो किसका हो। स्त्री कौन होती है। जब वह इतनी छोटी-सी बात नहीं समझती कि बिरादारी करना और धूम-धाम से दिल खोलकर बात करना लाजिमी बात है, तो उससे और कुछ कहना व्यर्थ है। गहने कौन खरीदे? भीमचन्द चार हज़ार दाम लगा चुके थे; लेकिन दुर्बलदास ने तीन हज़ार लगाये थे। इसलिए सौदा इन्हीं के हाथ हुआ। इस बात पर दुर्बलदास और भीमचन्द में तकरार भी हो गयी; लेकिन भीमचन्द को मुँह की खानी पड़ी। न्याय दुर्बल के पक्ष में था।

धनीराम ने कटाक्ष किया–देखो दुर्बलदास, माल तो ले जाते हो; पर तीन हज़ार से बेसी का है। मैं नीति की हत्या न होने दूँगा।

कुबेरदास बोले–अजी, तो घर में ही तो है,

कहीं बाहर तो नहीं गया। एक दिन मित्रों की दावत हो जायगी।

इस पर चारों महानुभाव हँसे। इस काम से फुरसत पाकर अब मकान का प्रश्न उठा। कुबेरदास 30 हज़ार देने पर तैयार थे; पर कानूनी कार्यवाही किये बिना संदेह की गुंजाइश थी। यह गुंजाइश क्यों कर रखी जाय। एक दलाल बुलाया गया। नाटा-सा आदमी था, पोपला मुंह कोई सत्तर की अवस्था। नाम था चोखेलाल।

कुबेरदास ने कहा–चोखेलाल जी से हमारी तीस साल की दोस्ती है। आदमी क्या रत्न हैं।

भीमचन्द–देखो चोखेलाल, हमें यह मकान बेचना है। इसके लिए कोई अच्छा ग्राहक लाओ। तुम्हारी दलाली पक्की।

कुबेरदास–बाजार का हाल अच्छा नहीं है, लेकिन फिर भी हमें यह तो देखना पड़ेगा कि रामनाथ के बाल-बच्चों को टोटा न हो। (चोखेलाल के कान में) तीस से आगे न जाना।

भीमचन्द–देखिए कुबेरदास, यह अच्छी बात नहीं है।

कुबेरदास–तो मैं क्या कर रहा हूँ। मैं तो यही कह रहा था कि अच्छा दाम लगवाना।

चोखेलाल– आप लोगों को मुझसे यह कहने की जरूरत नहीं मैं अपना धर्म समझता हूँ। रामनाथजी मेरे भी मित्र थे। मुझे यह भी मालूम है कि इस मकान के बनवाने में एक लाख से कम एक पाई भी नहीं लगी, लेकिन बाजार का हाल क्या आप लोगों से छिपा है। इस समय इसके 25 हज़ार से बेसी नहीं मिल सकते। सुभीते से तो किसी ग्राहक से दस-पाँच हज़ार और मिल जायँगे। लेकिन इस समय तो पचीस हज़ार भी मुश्किल से मिलेंगे।, 'लो दही और लाओ दही' की बात है।

धनीराम–पच्चीस हज़ार तो बहुत कम हैं भाई, और न सही तीस हजार तो करा दो।

चोखेलाल–30 क्या मैं तो 40 करा दूँ, पर कोई ग्राहक तो मिले। आप लोग कहते हैं, तो मैं 40हज़ार की बातचीत करूँगा।

धनीराम–जब तीस हज़ार में ही देना है तो कुबेरदास जी ही क्यों न ले लें। इतना सस्ता माल

दूसरों को क्यों दिया जाय।

कुबेरदास--आप सब लोगों की राय हो, तो ऐसा ही कर लिया जाय।

धनीराम ने 'हाँ-हाँ' कहकर हामी भरी। भीमचन्द मन में ऐंठकर रह गये। यह सौदा भी पक्का हो गया। आज ही वकील ने बैनामा लिखा। तुरन्त रजिस्ट्री भी हो गयी। सुशीला के सामने बैनामा लाया गया, तो उसने एक ठण्डी साँस ली और सजल नेत्रों से उस पर हस्ताक्षर कर दिये। अब उसे उसके सिवा और कहीं शरण नहीं है। बेवफा मित्र की भाँति यह घर भी सुख के दिनों में साथ देकर दु:ख के दिनों में उसका साथ छोड़ रहा है।

पंच लोग सुशीला के आँगन में बैठे बिरादरी के रुक्के लिख रहे हैं और अनाथ विधवा ऊपर झरोखे पर बैठी भाग्य को रो रही है। इधर रुक्का तैयार हुआ, उधर विधवा की आँखों से आँसू की बूँदें निकलकर रुक्के पर गिर पड़ीं।

धनीराम ने ऊपर देखकर कहा- पानी का छींटा कहाँ से आया?

संतलाल–बाई बैठी रो रही है। उसने रुक्के

पर अपने रक्त के आँसुओं की मुहर लगा दी है।

धनीराम–(ऊँचे स्वर में) अरे, तो तू रो क्यों रही है, बाई? यह रोने का समय नहीं है, तुझे तो प्रसन्न होना चाहिए कि पंच लोग तेरे घर में आज यह शुभ-कार्य करने के लिए जमा हैं। जिस पति के साथ तूने इतने दिनों भोग-विलास किया, उसी का पीछा सुधारने में तू दु:ख मानती है?

बिरादरी में रुक्का फिरा। इधर तीन-चार दिन पंचों ने भोज की तैयारियों में बिताये। घी धनीरामजी की आढ़त से आया। मैदा चीनी की आढ़त भी उन्हीं की थी। पांचवें दिन प्रात: काल ब्रह्माभोज हुआ। संध्या समय बिरादरी का ज्योनार सुशीला के द्वार पर बग्घियों और मोटरों की कतारें खड़ी थीं। भीतर मेहमानों की पंगतें थीं। आँगन, बैठक, दालान, बरोठा, ऊपर की छत, नीचे-ऊपर की छत, नीचे-ऊपर मेहमानों से भरा हुआ था। लोग भोजन करते थे और पंचों को सराहते थे।

खर्च तो सभी करते हैं, पर इन्तजाम का सलीका चाहिए। ऐसे स्वादिष्ट पदार्थ बहुत कम खाने में आते हैं।

'सेठ चम्पाराम के भोज के बाद ऐसा भोज रामनाथ जी का ही हुआ है।'

'इमरतियाँ कैसी कुरकुरी हैं!'

'रसगुल्ले मेवों से भरे है।'

'सारा श्रेय पंचों को है।'

धनीराम ने नम्रता से कहा–आप भाइयों की दया है जो ऐसा कहते हो। रामनाथ से भाई-चारे का व्यवहार था। हम न करते तो कौन करता। चार दिन से सोना नसीब नहीं हुआ।

'आप धन्य हैं! मित्र हों तो ऐसे हों।'

'क्या बात है! आपने रामनाथजी का नाम रख लिया। बिरादरी यही खाना-खिलाना देखती है। रोकड़े देखने नहीं आती।

मेहमान लोग बखान-बखानकर तर माल उड़ा रहे थे और उधर कोठरी में बैठी हुई सुशीला सोच रही थी–संसार में ऐसे स्वार्थी लोग हैं! सारा संसार स्वार्थमय हो गया है! सब पेटों पर हाथ फेर-फेर कर भोजन कर रहे हैं। कोई इतना भी नहीं पूछता कि अनाथों के लिए भी कुछ बचा या नहीं।

4

एक महीना गुजर गया। सुशीला को एक-एक पैसे की तंगी रही थी। नकद था ही नहीं, गहने निकल गये थे। अब थोड़े से बरतन बच रहे। उधर छोटे-छोटे बहुत-से बिल चुकाने थे। कुछ रुपये डाक्टर के, कुछ दर्जी के, कुछ बनियों के। सुशीला को यह रकमें घर का बचा-खुचा सामान बेचकर चुकानी पड़ी। और महीना पूरा होते-होते उसके पास कुछ न बचा। बेचारा संतलाल एक दुकान पर मुनीम था। कभी-कभी वह आकर एक-आध रुपया देता। इधर खर्च का हाथ फैला हुआ था। लड़के अवस्था को समझते थे। माँ को छेड़ते न थे, पर मकान के सामने से कोई खोंचे वाला निकल जाता और वे दूसरे लड़कों को फल या मिठाइयाँ खाते देखते, तो उनके मुँह में पानी भरकर आँखों में भर जाता था। ऐसी ललचायी हुई आँखों से ताकते थे कि दया आती थी। वही बच्चे, जो थोड़े दिन पहले मेवे-मिठाई को ओर ताकते न थे, अब एक-एक पैसे की चीज को तरसते थे। वही सज्जन, जिन्होंने बिरादरी का भोज करवाया था अब घर के सामने से निकल जाते, पर कोई झाँकता न था।

शाम हो गयी थी। सुशीला चूल्हा जलाये रोटियाँ सेंक रही थी और दोनों बालक चूल्हे के पास रोटियों को क्षुधित नेत्रों से देख रहे थे। चूल्हे के दूसरे ऐले पर दाल थी। दाल के पकने का इन्तजार था। लड़की ग्यारह साल की थी, लड़का आठ साल का।

मोहन अधीर होकर बोला–अम्माँ मुझे रूखी रोटियाँ ही दे दो, बड़ी भूख लगी है।

सुशीला–अभी दाल कच्ची है, भैया।

रेवती–मेरे पास एक पैसा है। मैं उसका दही लिये आती हूँ।

सुशीला–तूने पैसा कहाँ पाया?

रेवती– मुझे कल अपनी गुड़ियों की पेटारी में मिल गया था।

सुशीला–लेकिन जल्दी आइयो।

रेवती दौड़कर बाहर गयी और थोड़ी देर में एक पत्ते पर जरा-सा दही ले आयी। माँ ने रोटी सेंककर दे दी। मोहन दही से खाने लगा। आम लड़कों की भाँति वह भी स्वार्थी था। बहन से पूछा

भी नहीं।

सुशीला ने कड़ी आँखो से देखकर कहा–बहन को भी दे दे, अकेला ही खा जायेगा।

मोहन लज्जित हो गया। उसकी आँखें डबडबा आयीं।

रेवती बोली–नहीं अम्माँ, कितना मिला ही है। तुम खाओ मोहन, तुम्हें जल्दी नींद आ जाती है। मैं तो दाल पक जायगी तो खाऊँगी।

उसी वक्त दो आदमियों ने आवाज दी। रेवती ने बाहर जाकर पूछा। यह सेठ कुबेरदास के आदमी थे। मकान खाली कराने आये थे। क्रोध से सुशीला की आँखें लाल हो गयीं।

बरोठे में आकर कहा–अभी मेरे पति को पीछे हुए एक महीना भी नहीं हुआ, मकान खाली कराने की धुन सवार हो गयी। मेरा 50 हजार का घर 30 हजार में ले लिया, पाँच हजार सूद के उड़ाये फिर भी तस्कीन नहीं होती। कह दो, मैं अभी खाली नहीं करूँगी।

मुनीम ने नम्रता से कहा–बाईजी, मेरा क्या अखत्यार है। मैं तो केवल संदेसिया हूँ। जब चीज दूसरे की हो गयी तो आपकी छोड़नी पड़ेगी ही, झंझट करने से क्या मतलब।

सुशीला भी समझ गयी, ठीक ही कहता है। गाय हत्या के बल कै दिन खेत चरेगी। नर्म होकर बोली–सेठजी से कहो, मुझे दस-पाँच दिन की मुहलत दें। लेकिन नहीं, कुछ मत कहो। क्यों दस-पाँच दिन के लिए किसी का एहसान लूँ। मेरे भाग्य में इस घर में रहना लिखा होता, तो निकलती ही क्यों।

मुनीम ने पूछा– तो कल सबेरे तक खाली हो जायगा।

सुशीला–हाँ, हाँ कहती तो हूँ। लेकिन सबेरे तक क्यों, मैं अभी खाली किये देती हूँ। मेरे पास कौन-सा बड़ा सामान ही है। तुम्हारे सेठजी का रात-भर का किराया मारा जायगा। जाकर ताला-वाला लाओ या लाये हो?

मुनीम–ऐसी क्या जल्दी है, बाई। कल सावधानी से खाली कर दीजिएगा।

सुशीला–कल का झगड़ा क्यों रखूँ। मुनीमजी, आप जाइए, ताला लाकर डाल दीजिए। यह कहती हुई सुशीला अन्दर गयी, बच्चों को भोजन कराया, रोटी आप किसी तरह निगली, बरतन धोये, फिर एक एक्का मँगवाकर उस पर अपना मुख्तसर सामान लादा और भारी हृदय से उस घर से हमेशा के लिए बिदा हो गयी।

जिस वक्त यह घर बनवाया था, मन में कितनी उमंगें थी। इसके प्रवेश में कई हजार ब्राह्मणों का भोज हुआ था। सुशीला को इतनी दौड़-धूप करनी पड़ी थी कि वह महीने-भर बीमार रही थी। इसी घर में उसके दो लड़के मरे थे। यहीं उसका पति मरा था।

मरने वालों की स्मृतियों ने उसकी एक-एक ईंट को पवित्र कर दिया था। एक-एक पत्थर मानों उसके हर्ष से सुखी और उसके शोक से दुखी होता था। वह घर आज उससे छूटा जा रहा है।

उसने रात एक पड़ोसी के घर में काटी और दूसरे दिन 10रू महीने पर एक गली में दूसरा मकान ले लिया।

5

इस नये कमरे में इन अनाथों ने तीन महीने जिस कष्ट से काटे, वह समझने वाले ही समझ सकते हैं। भला हो बेचारे संतलाल का वह दस-पाँच रुपये से मदद कर दिया करता था। अगर सुशीला दरिद्र घर की होती, तो पिसाई करती, कपड़े सीती, किसी के घर में टहल करती; पर जिन कामों को

बिरादरी नीचा समझती है, उनका सहारा कैसे लेतीं नहीं तो लोग कहते यह सेठ रामनाथ की स्त्री है! उस नाम की भी तो लाज रखनी थी। समाज के चक्रव्यूह से किसी तरह भी तो छुटकारा नहीं होता। लड़की के दो-एक गहने बच रहे थे। वह भी बिक गये। जब रोटियों ही के लाले थे, तो घर का किराया कहां से आता। तीन महीने बाद घर का मालिक, जो उसी बिरादरी का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था और जिसने मृतक-भोज में खूब बढ़-बढ़कर हाथ मारे थे अधीर हो उठा। बेचारा कितना धैर्य रखता। 30 रु का मामला है, रुपये-आठ आने की बात नहीं है। इतनी बड़ी रकम नहीं छोड़ी जाती।

आखिर एक दिन सेठजी ने आकर लाल लाल-आँखें करके कहा-अगर तू किराया नहीं दे सकती, तो घर खाली कर दे। मैंने बिरादरी के नाते इतनी मुरौवत की। अब किसी तरह काम नहीं चल सकता।

सुशीला बोली-सेठजी मेरे पास रुपये होते, तो पहले आपका किराया देकर तब पानी पीती। आपने इतनी मुरौवत की, इसके लिए मेरा सिर आपके चरणों पर है; लेकिन अभी मैं बिल्कुल खाली हाथ हूं। यह समझ लीजिए कि भाई के बाल-बच्चों की परवरिश कर रहे हैं। और क्या कहूँ।

सेठ-चल-चल, इस तरह की बातें बहुत सुन चुका। बिरादारी का आदमी है, तो उसे चूस लो। कोई मुसलमान होता, तो उसके चुपके से महीने-महीने दे देती, नहीं तो उसने निकाल बाहर किया होता। मैं बिरादरी का हूँ, इसलिए मुझे किराया देने की दरकार नही। मुझे माँगना ही नहीं चाहिए, यही तो बिरादरी के साथ करना चाहिए।

इसी समय रेवती आकर खड़ी हो गयी। सेठ जी ने उसे सिर से पाँव तक देखा और तब किसी कारण बोले-अच्छा यह लड़की तो सयानी हो गयी। इसकी सगाई की बातचीत नहीं की?

रेवती तुरन्त भाग गयी। सुशीला ने इन शब्दों में आत्मीयता की झलक पाकर पुलकित कंठ से कहा-अभी तो कहीं बातचीत नहीं हुई सेठजी। घर का किराया तक तो अदा नहीं कर सकती, सगाई क्या करूँगी। अभी छोटी भी तो है।

सेठजी ने तुरन्त शास्त्रों का आधार दिया-कन्याओं के विवाह की यही अवस्था है। धर्म को कभी नहीं छोडना चाहिए। किराया की कोई बात नहीं है। हमें क्या मालूम था कि सेठ रामनाथ के परिवार की यह दशा है।

सुशीला-तो आपकी निगाह में कोई अच्छा घर है! यह तो आप जानते ही हैं, मेरे पास लेने-देने को कुछ नहीं है।

झाबरमल-(इन सेठजी का यही नाम था।)-लेन-देन को कोई झगड़ा नहीं होगा, बाईजी। ऐसा घर है कि लड़की आजीवन सुखी रहेगी। लड़का भी उसके साथ रह सकता है। कुल का सच्चा, हर तरह से सम्पन्न परिवार है। हाँ, वह दोहाजू है।

सुशीला--उम्र अच्छी होनी चाहिए, दोहाजू होने से क्या होता है।

झाबरमल--उम्र भी कुछ ज्यादा नहीं, अभी चालीसवाँ ही साल है उसका, पर देखने में अच्छा, हृष्टपुष्ट है। मर्द की उम्र उसका भोजन है। बस, यह समझ लो कि परिवार का उद्धार हो जायगा।

सुशीला ने अनिच्छा के भाव से कहा-अच्छा मैं सोचकर जवाब दूँगी। एक बार मुझे दिखा देना।

झाबरमल--दिखाने को कहीं नहीं जाना है, बाई।वह तो तेरे सामने ही खड़ा है।

सुशीला ने घृणापूर्ण नेत्रों से उसे उसकी ओर देखा। इस पचास साल के बुड्ढे की यह हवस! छाती का माँच लटककर नाभी तक आ पहुँचा है, फिर भी विवाह की धुन सवार है। यह दुष्ट समझता है कि प्रलोभनों में पड़कर मैं अपनी लड़की उसके गले बांध दूंगी। वह अपनी बेटी को आजीवन क्वाँरी रखेगी; पर ऐसे मृतक से विवाह करके उसका जीवन नष्ट न करेगी। पर उसने अपने क्रोध को शांत किया। समय का फेर है, नहीं तो ऐसों का उससे ऐसा प्रस्ताव करने का साहस ही क्यों होता। बोली-आपकी इस कृपा के लिए आपको धन्यवाद देती हूँ। सेठजी, पर मैं कन्या का विवाह आपसे नहीं कर सकती।

झाबरमल- तो और क्या तू समझती है कि तेरी कन्या के लिए बिरादरी में कोई कुमार मिल जायगा?

सुशीला-मेरी लड़की क्वाँरी रहेगी।

झाबरमल–और रामनाथ के नाम को कलंकित करेगी।

सुशीला-तुम्हें मुझसे ऐसी बाते करते लाज नहीं आती। नाम के लिए घर खोया, संपत्ति खोयी पर कन्या कुएँ में नहीं डुबा सकती।

झाबरमल-तो मेरा किराया दे दे।

सुशीला ने भीतर घुसकर गृहस्थी की एक-एक वस्तु निकालकर गली में फेंक दी। घड़ा फूट गया, मटके टूट गये। संदूक के कपड़े बिखर गये। सुशीला तटस्थ खड़ी अपने अदिन की यह क्रूर क्रीड़ा देखती रही।

घर का यों विध्वंस करके झाबरमल ने घर में ताला डाल दिया और अदालत से रुपये वसूल करने की धमकी देकर चले गये।

6

बड़ों के पास धन होता है, छोटों के पास हृदय होता है। धन से बड़े-बड़े व्यापार होते हैं, बड़े-बड़े महल बनते हैं, नौकर-चाकर होते हैं, सवारी-शिकारी होती है; हृदय से सम्वेदना होती है, आँसू निकलते हैं।

उसी मकान से मिली हुई एक साग-भाजी बेचनेवाली खटकिन की दुकान थी। वृद्धा, विधवा, निपूती स्त्री थी, बाहर से आग, भीतर से पानी। झाबरमल को सैकड़ों सुनायीं और सुशीला की एक-एक उठाकर अपने घर में ले गयी। मेरे घर में रहो बहू। मुरोवत में आ गयी, नहीं तो उसकी मूँछें उखाड़ लेती। मौत सिर पर नाच रही है; आगे नाथ न पीछे पगहा! और धन के पीछे मरा जाता है। जाने छाती पर लादकर ले जायगा। तुम चलो मेरे घर में रहो। मेरे यहाँ किसी बात का खटका नहीं। बस, मैं अकेली हूँ। एक टुकड़ा मुझे भी दे देना।

सुशीला ने डरते-डरते कहा–माता, मेरे पास सेर भर आटे के सिवा और कुछ नहीं है। मैं तुम्हें किराया कहाँ से दूँगी।

बुढ़िया ने कहा–मैं झाबरमल नहीं हूँ बहू, न कुबेरदास हूँ। मैं तो समझती हूँ, जिन्दगी में सुख भी है, दुख भी है। सुख में इतराओ मत, दु:ख में घबराओ मत। तुम्हीं से चार पैसे कमाकर अपना पेट पालती हूँ। तुम्हें उस दिन भी देखा था, जब तुम महल में रहती थी। और आज भी देख रही हूं, जब तुम अनाथ हो। जो मिजाज तब था, वही अब है। मेरे धन्य भाग कि तुम मेरे घर में आओ; मेरी आँखें फूटी हैं, जो तुमसे किराया माँगने जाऊँगी।

इन सांत्वना से भरे हुए सरल शब्दों ने सुशीला के हृदय का बोझ हल्का कर दिया। उसने देखा, सच्ची सज्जनता भी दरिद्रों और नीचों ही के पास रहती है। बड़ों को दया भी होती है, अहंकार का दूसरा रूप!

इस खटकिन के साथ रहते हुए सुशीला को छ: महीने हो गये थे। सुशीला का उससे दिन-दिन स्नेह बढ़ता जाता था। वह जो कुछ पाती,लाकर सुशीला के हाथ में रख देती। दोनों बालक उसकी दो आँखें थीं। मजाल न थी कि पड़ोस का कोई आदमी उन्हें कड़ी आँखों से देख ले। बुढ़िया दुनिया सिर पर उठा लेती। संतलाल हर महीने कुछ-न-कुछ दे दिया करते था। इससे रोटी-दाल चल जाती थी।

कार्तिक का महीना था-ज्वर का प्रकोप हो रहा था मोहन एक दिन खेलता-कूदता बीमार पड़ गया और तीन दिन तक अचेत पड़ा रहा। ज्वर इतने जोर का था कि पास खड़े रहने से लपट-सी निकलती थी। बुढ़िया ओझे-सयानों के पास दौड़ती फिरती थी; पर ज्वर' उतरने का नाम न लेता था। सुशीला को भय हो रहा थे, यह टाइफाइड है। इससे उसके प्राण सूख रहे थे।

चौथे दिन उसने रेवती से कहा–बेटा, तूने बड़े पंचजी का घर तो देखा है। जाकर उनसे कह, भैया बीमार हैं, कोई डाक्टर भेज दें।

रेवती को कहने भर की देर थी। दौड़ती हुई सेठ कुबेरदास के पास गयी।

'कुबेरदास बोले–डाक्टर की फीस 16 रुपया है। तेरी माँ दे देगी?

रेवती ने निराश होकर कहा–अम्माँ के पास रुपये कहाँ है?

कुबेरदास–तो फिर किस मुँह से मेरे डाक्टर को बुलाती है। तेरा मामा कहाँ है? उनसे जाकर कह, सेवा-समिति से कोई डाक्टर बुला ले जायँ, नहीं तो खैराती अस्पताल में क्यों नहीं लड़के

को ले जातीं? या अभी वही पुरानी बू समायी हुई है। कैसी मूर्ख स्त्री है, घर में टका नहीं और डाक्टर का हुकुम लगा दिया। समझती होगी, फीस पंचजी दे देंगे। पंचजी क्यों फीस दें? बिरादरी का धन धर्म-कार्य के लिए है, यों उड़ाने के लिए नहीं है।

रेवती माँ के पास लौटी, पर जो कुछ सुना था, वह उससे न कह सकी। घाव पर नमक क्यों छिड़के। बहाना कर दिया; बड़े पंचजी कहीं गये हैं।

सुशीला-तो मुनीम से क्यों नहीं कहा! यहाँ क्या कोई मिठाई खाये जाता था, जो दौड़ती चली आयी है?

इसी वक्त सन्तलाल एक वैद्यजी को लेकर आ पहुँचा।

वैद्यजी एक दिन आकर दूसरे दिन न लौटे। सेवासमिति के डाक्टर भी दो दिन बड़ी मिन्नत से आये। फिर उन्हें भी अवकाश न रहा और मोहन की दशा दिनोंदिन बिगड़ती जाती थी। महीना बीत गया; पर ज्वर ऐसा चढ़ा कि एक क्षण के लिए भी न उतरा। उसका चेहरा इतना सूख गया था कि देखकर दया आती थी। न कुछ बोलता, न कहता, यहाँ तक कि करवट भी न बदल सकता था। पड़े-पड़े देह की खाल फट गयी, सिर के बाल गिर गये। हाथ-पाँव लकड़ी हो गये। सन्तलाल काम से छुट्टी पाता तो आ जाता, पर इससे क्या होता, तीमारदारी दया तो नहीं है।

एक दिन संध्या समय उसके हाथ ठण्डे हो गये। माता के प्राण पहले ही से सूखे हुए थे। यह हाल देख कर रोने-पीटने लगी। मिन्नतें तो बहुतेरी हो चुकी थीं। रोती हुई मोहन की खाट के सात फेरे करके हाथ बाँधकर बोली-भगवान! यही मेरे जन्म की कमाई है। अपना सर्वस्व खोकर भी मैं बालक को छाती से लगाये हुए सन्तुष्ट थी; लेकिन यह चोट न सही जायगी। तुम इसे अच्छा कर दो। इसके बदले मुझे उठा लो बस, मैं यही दया चाहती हूँ, दयामय!

संसार के रहस्य को कौन समझ सकता है? क्या हममें से बहुत को यह अनुभव नहीं कि जिस दिन हमने बेईमानी करके कुछ रकम उड़ायी, उसी दिन उस रकम का दुगुना नुकसान हो गया। सुशीला को उसी दिन रात को ज्वर आ गया ओर उसी दिन मोहन का ज्वार उतर गया। बच्चे की सेवा-सुश्रूषा में आधी तो यों ही रह गयी थी, इस बीमारी ने ऐसा पकड़ा कि फिर न छोड़ा। मालूम नहीं, देवता बैठे सुन रहे थे क्या, उसकी याचना अक्षरशः पूरी हुई। पन्द्रहवें दिन मोहन चारपाई से उठकर माँ के पास आया और उसकी छाती पर सिर रखकर रोने लगा। माता ने उसके गले में बाँह डालकर उसे छाती से लगा लिया ओर बोली-क्यों रोते हो बेटा, मैं अच्छी हो जाऊँगी।

अब मुझे क्या चिन्ता। भगवान पालने वाले है। वहीं तुम्हारे रक्षक हैं। वही तुम्हारे पिता हैं। अब मैं सब तरफ से निश्चित हूँ! जल्द अच्छी हो जाऊँगी।

मोहन बोला–जिया तो कहती है, अम्माँ अब न अच्छी होंगी।

सुशीला ने बालक का चुम्बन लेकर कहा–जिया पगली है, उसे कहने दो। मैं तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊँगी। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगी। हाँ, जिस दिन तुम कोई अपराध करोगे, किसी की कोई चीज उठा लोगे, उसी दिन मैं मर जाऊँगी।

मोहन ने प्रसन्न होकर कहा–तो तुम मेरे पास से कभी नहीं जाओगी माँ।

सुशीला ने कहा– कभी नहीं बेटा, कभी नहीं।

उसी रात को दु:ख और विपत्ति की मारी हुई यह अनाथ विधवा दोनों अनाथ बालकों को भगवान पर छोड़कर परलोक सिधार गयी।

8

इस घटना को तीन साल हो गये हैं, मोहन और रेवती दोनों उसी वृद्धा के पास रहते हैं। बुढ़िया माँ तो नहीं है; लेकिन माँ से बढ़कर है। रोज मोहन को रात की रखी रोटियाँ खिलाकर गुरुजी के पाठशाला में पहुँचा आती है। छुट्टी के समय जाके लिवा आती है। रेवती का अब चौदहवाँ साल है। वह घर का सारा काम–पीसना-कुटना, चौका-बरतन, झाड़ू-बहारू–करती है। बढ़िया सौदा बेचने चली जाती है, तो वह दुकान पर भी आ बैठती है।

एक दिन बड़े पंच सेठ कुबेरदास ने उसे बुला भेजा और बोले–तुझे दुकान पर बैठे शर्म नहीं आती, सारी बिरादरी की नाक कटा रही है? खबरदार, जो कल से दुकान पर बैठी। तेरे पाणिग्रहण के लिए झाबरमल जी को पक्का कर लिया है।

सेठानी ने समर्थन किया–तू अब सयानी हुई बेटी, अब तेरा इस तरह बैठना अच्छा नहीं। लोग तरह-तरह की बातें करने लगते हैं। सेठ झाबरमल तो राजी ही न होते थे, हमने बहुत कह-सुनकर राजी किया है। बस समझ ले कि रानी हो जायेगी लाखों की सम्पत्ति है, लाखों की। तेरे धन्य भाग कि ऐसा वर मिला। तेरा छोटा भाई है, उसको भी कोई दुकान करा दी जायगी।

सेठ-बिरादरी की कितनी बदनामी है!

सेठानी-है ही।

रेवती ने लज्जित होकर कहा–मैं क्या जानूँ, आप मामा से कहें।

सेठ (बिगड़कर)–वह कौन होता है! टके पर मुनीमी करता है। उससे मैं क्या पूछूँ। मैं बिरादरी का पंच हूँ। मुझे अधिकार है, जिस काम में बिरादरी का कल्याण देखूँ, वह करूँ। मैंने और पंचों से राय ले ली है। सब मुझसे सहमत हैं। अगर तू यों नहीं मानेगी,

तो हम अदालती कार्रवाई करेंगे। तुझे खरच-वरच का काम होगा, यह लेती जा।

यह कहते हुए उन्होंने 20 रूपये के नोट रेवती की तरफ फेंक दिये।

रेवती ने नोट उठाकर वहीं पुरजे-पुरजे कर डाले और तमतमाये मुख से बोली–बिरादरी ने तब हम लोगों की न पूछी, हम रोटियों के मुहताज थे! मेरी माता मर गयी, कोई झाँकने तक न आया। मेरा भाई बीमार हुआ, किसी ने खबर तक न ली। ऐसी बिरादरी की मुझे परवाह नहीं है।

रेवती चली गयी, तो झाबरमल कोठरी से निकल आये। चेहरा उदास था।

सेठानी ने कहा–लड़की बड़ी घमंडिन है। आँख का पानी मर गया है।

झाबरमल–बीस रुपये खराब हो गये। ऐसा फाड़ा है कि जुड़ भी नहीं सकते।

कुबेरदास–तुम घबराओ नहीं; मैं इसे अदालत से ठीक करूँगा। जाती कहाँ है।

झाबरमल–अब तो आपका ही भरोसा है।

बिरादरी के बड़े पंच की बात कहीं मिथ्या हो सकती है? रेवती नाबालिग थी। माता-पिता नहीं थे। ऐसी दशा में पंचों का उस पर पूरा अधिकार था। वह बिरादारी के दवाब में नहीं रहना चाहती है, न चाहे। कानून बिरादरी के अधिकार की उपेक्षा नहीं कर सकता।

संतलाल ने यहा माजरा सुना, तो दाँत पीसकर बोले–न जाने इस बिरादरी का भगवान कब अन्त करेंगे।

रेवती–क्या बिरादरी मुझे जबरदस्ती अपने अधिकार में ले सकती है?

सन्तलाल–हाँ बेटी, धनिकों के हाथ में तो कानून भी है!

रेवती–मैं कह दूँगी कि मैं उनके पास नहीं रहना चाहती।

सन्तलाल–तेरे कहने से क्या होगा। तेरे भाग्य में यही लिखा था, तो किसका बस है। मैं जाता हूँ बड़े पंच के पास।

रेवती–नहीं मामाजी, तुम कहीं न जाओ। जब भाग्य ही का भरोसा है, तो जो कुछ भाग्य में लिखा

होगा वह होगा।

रात तो रेवती ने घर में काटी। बार-बार निद्रा-मग्न भाई को गले लगाती। यह अनाथ अकेला कैसे रहेगा, यह सोचकर उसका मन कातर हो जाता; पर झाबरमल की सूरत याद करते उसका संकल्प दृढ़ हो जाता।

प्रातःकाल रेवती गंगा स्नान करने गयी। यह इधर कई महीनों से उसका नित्य का नियम था। आज जरा अंधेरा था; पर यह कोई सन्देह की बात न थी। सन्देह तब हुआ, जब आठ बज गये और वह लौटकर न आयी। तीसरे पहर सारी बिरादरी में खबर फैल गई-सेठ रामनाथ की कन्या गंगा में डूब गई। उसकी लाश पाई गई।

कुबेरदास ने कहा-चलो, अच्छा हुआ; बिरादरी की बदनामी तो न होगी।

झाबरमल ने दुखी मन से कहा- मेरे लिए अब कोई उपाय कीजिए।

उधर मोहन सिर पीट-पीटकर रो रहा था और बुढ़िया उसे गोद में लिये समझा रही थी- बेटा, उस देवी के लिए क्यों रोते हो। जिन्दगी में उसके दुख ही दुख था। अब वह अपनी माँ की गोद में आराम कर रही है।

बाल कहानी

राजा का मुकुट

कानन वन के सारे जानवर परेशान थे। उनकी चिंता का कारण था-वन में अक्सर होने वाली चोरियां! पता नहीं कौन सा डाकू यहां आ गया था कि शाम ढलते ही सबको घरों में दुबकना पड़ता था। चोर कोई एक-दो नहीं, बल्कि पूरे गिरोह के साथ आते थे, और जिस घर में घुसते, एक-एक वस्तु उठा लेते। विरोध करने पर वे गोलियां चलाने लगते। जिससे भयभीत होकर पशु अपना मुंह तक नहीं खोलते थे। अब से पहले ऐसा नहीं था। सब ओर शांति व्यवस्था बनी हुई थी। वन के तमाम पशु-पक्षी निर्भय होकर वास करते थे। उनमें एकता थी। यही कारण था कि किसी ने उनकी ओर दृष्टि उठाने की हिम्मत नहीं की थी। लेकिन उनकी शांति अचानक किसी ने छीन ली थी। सब भय के माहौल में जीने को विवश हो रहे थे।

एक दिन तो अनर्थ हो गया। जब चोरों ने वनराज शेर सिंह के महल में डाका डाल दिया। किसी को पता नहीं चला। चोरों ने काफी संपत्ति सहित उनका अमूल्य मुकुट भी चुरा लिया था। प्रातः यह खबर पूरे वन में आग की भाँति फैल गयी। जिसने भी सुना, चकित रह गया—राजा के महल में चोरी? स्वयं शेर सिंह भी बौखला गये, कहीं यह सिपाहियों की मिलीभगत तो नहीं? सच्चाई का पता लगाने के लिए उन्होंने चोरों के खिलाफ अभियान चलाने का निर्णय किया! उनके सिपाही वन की चारों सीमाओं को सीलकर चोरों की खोजबीन में लग गये। उधर चोरों में हड़कंप मच गयी। वे जहां-तहाँ छुपने लग गये। सप्ताह भर बीत गए। राजा की गुरिल्ला सेना को सफलता नहीं मिली। एकाएक एकदिन पिंटी लोमड़ी ने राजा को सूचना दी ''महाराज, आप चिंता न करें। मैंने चोरों का पता लगा लिया है।'' '' कहाँ रहते हैं वे दुष्ट!'' शेर सिंह गरजे ''शीघ्र बताओ।'' पिंटी ने उन्हें बताया-'' महाराज ''वन की पूर्वी सीमा के पास बियावान में मैंने कुछ असामाजिक पशुओं को एकत्र देखा है। उनके साथ चंपकवन का कुख्यात गीदड़दास भी था, जो शायद गिरोह का सरदार है।'' ''ठीक है। मैं शीघ्र तथ्यों का पता लगवाता हूँ।'' शेरसिंह ने कहा और उसी समय गोरिल्ला सेना को उस स्थान पर जाने का आदेश जारी किया। सेना ने मौके पर ही चोरों को धर दबोचा।'' तुम सब गिरफ्तार

किए जाते हो।'' चोरों का होश उड़ गया। गीदड़दास, जो हथियारों से लैस भागने का प्रयास कर रहा था- गोरिल्लों ने तुरंत उसे हथकड़ी लगा दी- ''हम तुम्हें भागने नहीं देंगे।'' और गीदड़दास दांत पीसकर रह गया! गोरिल्ला सैनिकों ने उस स्थान से लाखों का सामान बरामद किया। जिसमें शेरसिंह का मुकुट भी था। चोरों को सामान सहित राजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। चोरों को देखते ही उनका क्रोध निन्यानबे डिग्री हो गया "तुम सब हो हमारे राज्य की शांति भंग करने वाले।'' चोर कांपने लगे। पूछताछ करने पर गीदड़दास ने बताया कि वह चंपकवन के प्रधानमंत्री चीता सिंह के लिए चोरी का काम करता था। जो उन्हें कमीशन देता था। शेर सिंह ने उन सबको कारागार में डालने का आदेश दिया। बरामद सामानों को वन के जानवरों के बीच रखा गया। ताकि सब अपना-अपना सामान पहचान सकें। अपना मूल्यवान मुकुट पाकर वे हर्षित हुए लेकिन क्रोधित भी कि चोरों ने उसे चुराने की हिम्मत दिखाई।

चोरों को पकड़ लिए जाने के बाद काननवन में पूर्व की भाँति शाँति छा गयी। पशु-पक्षी प्रसन्नतापूर्वक वास करने लगे। राजा ने गोरिल्ला सेना को इस सफलता के लिए पुरस्कृत किया।

○ मोहम्मद मुमताज़ हसन
गया(बिहार)

नन्हीं पेंसिल ने बनाया

रावी
अनुपम पब्लिक स्कूल,
एलेनाबाद, सिरसा

रामू और भैंस का नाच

○ ओमेन्द्र

रामू को सपने देखने की आदत थी। वह दिन में भी सपने देखने लगता था। रामू के घर में एक प्यारी–सी भैंस थी। एक दिन रामू दूध निकालने के लिये बाल्टी लेकर आया। जैसे ही वह भैंस के पास आया, उसे सपना आ गया। सपने में उसने देखा–आज भैंस ने ढेर सारा दूध दिया है और रामू उसे बेचने शहर की तरफ चल दिया है। दूध बेचकर उसने ढेर सारे पैसे इकट्ठे किये। उन पैसों से आधे पैसों का वह चारा लाया। आधे पैसे बचाकर रखे। धीरे–धीरे और पैसे जमा होते गये। बच्चों को उसने ढेर सारी मिठाई लाकर दी और पैसे गिन–गिन कर एक और भैंस लाने की सोचने लगा। वह अपनी भैंस के पास खड़ा–खड़ा ही यह सोच रहा था।

भैंस ने सोचा, उसका मालिक तो खड़ा–खड़ा ही सो गया है। उसने आव देखा न ताव, एक लात रामू के मारी। रामू के हाथ से बाल्टी छूट कर दूर जा गिरी। रामू भी औंधे मुँह जमीन पर गिर गया। रामू का सपना टूट गया। उसने भैंस की तरफ गुस्से से देखा और एक डंडा लेकर आया।

डंडा देखते ही भैंस ने मुँह फुला लिया। भैंस ने घूर कर रामू की तरफ देखा और रामू से कहा–"देख डंडे की मत मारना, नहीं तो मैं तेरे सींग की मारूंगी।" यह कह कर उसने जोर से गर्दन हिलाई।

यह सुनते ही डंडा रामू के हाथ से छूट गया। डंडा जैसे ही धरती पर गिरा आसमान में बादल गरजने लगे। भैंस ने आसमान की तरफ मुँह उठा कर देखा। उसने सोचा–बादलों का रंग कितना प्यारा है, बिल्कुल मेरी तरह काला–काला। अगर मेरे भी पंख होते तो मैं भी उड़ कर बादलों के साथ खेलती। उड़ कर आसमान को छू लेती।

इतने में ही जल्दी से रामू ने भैंस के डंडे की मार दी। रामू के हाथ में डंडा देखकर भैंस को फिर गुस्सा आ गया। गुस्से से उसने रस्सी तोड़ ली और रामू के पीछे तेजी से दौड़ी।

रामू गली में भागा।

आगे–आगे रामू और पीछे–पीछे भैंस।

"बचाओ! बचाओ! "चिल्लाता हुआ रामू गाँव में भागा।

सब गाँव वाले बड़े चाव से रामू और भैंस

रामू और भैंस का नाच

O ओमेन्द्र

रामू को सपने देखने की आदत थी। वह दिन में भी सपने देखने लगता था। रामू के घर में एक प्यारी–सी भैंस थी। एक दिन रामू दूध निकालने के लिये बाल्टी लेकर आया। जैसे ही वह भैंस के पास आया, उसे सपना आ गया। सपने में उसने देखा–आज भैंस ने ढेर सारा दूध दिया है और रामू उसे बेचने शहर की तरफ चल दिया है। दूध बेचकर उसने ढेर सारे पैसे इकट्ठे किये। उन पैसों से आधे पैसों का वह चारा लाया। आधे पैसे बचाकर रखे। धीरे–धीरे और पैसे जमा होते गये। बच्चों को उसने ढेर सारी मिठाई लाकर दी और पैसे गिन–गिन कर एक और भैंस लाने की सोचने लगा। वह अपनी भैंस के पास खड़ा–खड़ा ही यह सोच रहा था।

भैंस ने सोचा, उसका मालिक तो खड़ा–खड़ा ही सो गया है। उसने आव देखा न ताव, एक लात रामू के मारी। रामू के हाथ से बाल्टी छूट कर दूर जा गिरी। रामू भी औंधे मुँह जमीन पर गिर गया। रामू का सपना टूट गया। उसने भैंस की तरफ गुस्से से देखा और एक डंडा लेकर आया।

डंडा देखते ही भैंस ने मुँह फुला लिया। भैंस ने घूर कर रामू की तरफ देखा और रामू से कहा–"देख डंडे की मत मारना, नहीं तो मैं तेरे सींग की मारूंगी।" यह कह कर उसने जोर से गर्दन हिलाई।

यह सुनते ही डंडा रामू के हाथ से छूट गया। डंडा जैसे ही धरती पर गिरा आसमान में बादल गरजने लगे। भैंस ने आसमान की तरफ मुँह उठा कर देखा। उसने सोचा–बादलों का रंग कितना प्यारा है, बिल्कुल मेरी तरह काला–काला। अगर मेरे भी पंख होते तो मैं भी उड़ कर बादलों के साथ खेलती। उड़ कर आसमान को छू लेती।

इतने में ही जल्दी से रामू ने भैंस के डंडे की मार दी। रामू के हाथ में डंडा देखकर भैंस को फिर गुस्सा आ गया। गुस्से से उसने रस्सी तोड़ ली और रामू के पीछे तेजी से दौड़ी।

रामू गली में भागा।

आगे–आगे रामू और पीछे–पीछे भैंस।

"बचाओ! बचाओ! "चिल्लाता हुआ रामू गाँव में भागा।

सब गाँव वाले बड़े चाव से रामू और भैंस

की दौड़ देखने लगे।

गाँव के बच्चे भी हो! हो! करते पीछे–पीछे दौड़ने लगे। सन्तरा ने कालू से पूछा–''बोल कौन जीतेगा? भैंस जीतेगी या रामू?'' तीसरा बच्चा बीच में ही बोला–''अगर रामू तेज दौड़ा तो रामू जीतेगा, और भैंस तेज दौड़ी तो भैंस जीतेगी।''

कालू के बापू बोले–''कालू! दौड़ देखने में बड़ा मजा आ रहा है।''

दौड़ता–दौड़ता रामू लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया।

भैंस ने जोर से पेड़ को टक्कर मारी और रामू जी पके आम की तरह पेड़ से नीचे आ गिरे।

कालू चिल्लाया–''अरे बाप रे ! इतना बड़ा आम!''

सभी बच्चे खिल–खिला कर हँसने लगे और रामू की तरफ दौड़े। इतने में ही बादल गरजे और बरसात शुरू हो गई। गर्मी में ठंडी–ठंडी बूंदे पड़ते ही भैंस अपना गुस्सा भूल गई। भैंस ने तो नाचना ही शुरू कर दिया। भैस को नाचते देखकर रामू भी नाचने लगा।

अब तो सारे बच्चे, रामू और भैंस, सभी ठुमक–ठुमक कर नाच रहे थे। सभी को बरसात में बड़ा मजा आ रहा था।
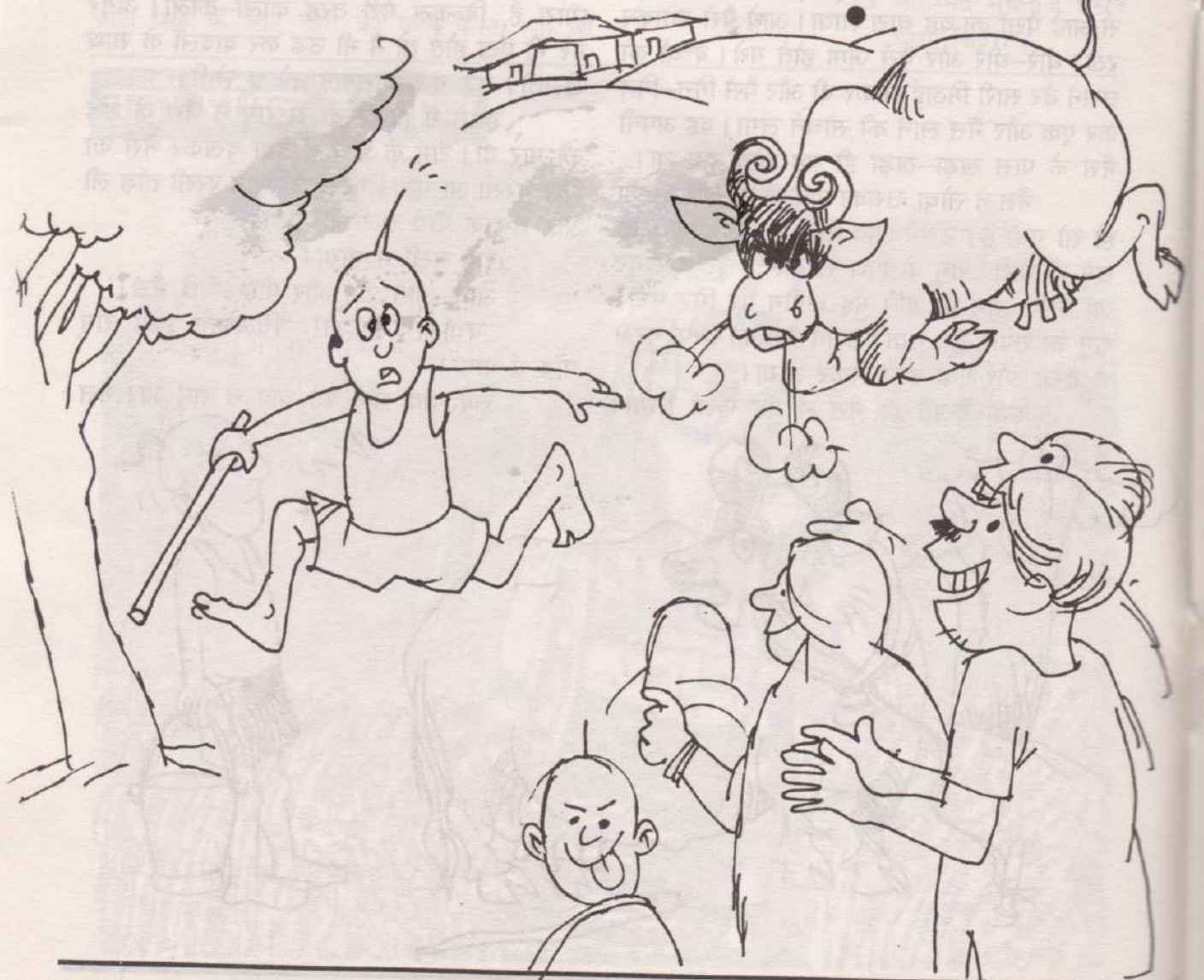
कविताएँ

पेड़

● सफ़दर हाशमी

मेरी जड़ें
नहीं दिखती तुम्हें।
लेकिन वो हैं।
ज़मीन के नीचे
गहराई तक फैली हुई।
वही सोखती हैं।
ज़मीन से पानी
मेरी प्यास बुझाने को,
मुझे पत्तों से सजाने को
लो फूट आए
हरे–भरे मेरे कपड़े–लत्ते
लेकिन ये मेरी पोशाक ही नहीं
मेरे पोषक भी हैं।
हवा से खींचते हैं सांस
और सूरज से गर्मी
और बनाते हैं मेरी खुराक।
आओ इस जंगल में आओ
मत घबराओ
मैं इस जंगल का एक पेड़
तुम्हें बुलाता हूँ।
अपनी कथा सुनाता हूँ
आओ, अपने साथियों से मिलवाता हूँ।
आओ, छूकर देखो मेरा तना
सीधा और मजबूत
और ऊपर
मेरी पतली, बलखाती शाखों को देखो
देखो अनगिनत टहनियों को।
क्या, पूछते हो पत्ते किधर गए?
मेरे दोस्त,
वे तो पिछले पतझड़ में गिर गए।
लेकिन जल्द ही फिर निकल आएंगे
मेरी डालियों पर लद जाएंगे।
ये कीड़े–मकोड़े
रेंगते, उड़ते, फदकते हुए
ये सब मेरे दोस्त हैं
मैने इन्हें
दरारों, छेदों सुराखों में
बसाया है।
इनके अण्डों को
जाड़े–गर्मी से बचाया है
इनके बच्चों को
अपने सीने पर सुलाया है।
इसी से खुश होकर
ये गाते हैं गीत
मधुर संगीत
भुन–भुन, झिन–झिन
और नाचते हैं
सारे–सारे दिन।
रंग बिरंगे पंछी
मेरे पास आते हैं
मेरे दोस्त बन जाते हैं।
मेरी टहनियों के बीच
अपने घोंसले बनाते हैं
चहकते हैं, गाते हैं
उड़ते हैं, मंडराते हैं
अपने नन्हें–मुन्ने बच्चों को
उड़ना सिखाते हैं।
ये बच्चे बहुत प्यारे हैं
बच्चों को मैं प्यारा हूँ।
आते है मेरे साये में उधम मचाने
लटकने मेरी डालियों से
झूले बनाने
मेरे खट्टे–मीठे फलों को
चोरी–छुप्पे खाने।
मुझे ध्यान से देखो।
इस जंगल के सभी पेड़ों को
प्यार से देखो।
हमारा और तुम्हारा
कितना गहरा नाता है
ये जंगल सब प्राणियों के
कितने काम आता है।

कविताएँ

स्कूल और बच्चे

• गिरीश

बच्चों की समझ में नहीं आता
कि स्कूलों में क्यों नहीं पढ़ाते
पौधों के बारे में जो महेश को अच्छा लगता है?
माला बनाना जो संगीता को बहुत अच्छा लगता है?
घर बनाना जो राकेश को भाता है?
ड्रामा करना/गाना गाना जो दिनेश को अच्छा लगता है?
सुरेश अच्छा तैरता है
रमेश अच्छी कुश्ती लड़ता है
परेश तलवार अच्छी चलाता है?
गयास गुलेल का निशाना अच्छा साधता है,
याकूब तो साबुन भी बना लेता है
सत्तार शहद की मक्खियां पालता है
फिर इन सबको इन सबके लिए
नंबर क्यों नहीं मिलते?
क्या इन्हें इनके मन की चीज़ नहीं पढ़ाई जाएगी?
क्या इन्हें ऐसे ही मजबूर होना पड़ेगा?
नकल करने के लिए?
क्या इनकी संवेदनाओं को कुन्द करना ही
स्कूलों का काम रहेगा?

कब जागेगा इनका आत्मविश्वास?
कौन जगाएगा?
कब होगा इन्हें एहसास?
कि ये जो जानते हैं
वह भी उतना ही जरूरी है
जो अभी सीखने वाले हैं।
कि जहाँ ये रहते हैं
वह उतना ही अच्छा है
जितना कि दुनिया का कोई और कोना
और यदि कुछ कमज़ोरियां उस जगह में दिखती हैं
तो दूर करने की जिम्मेदारी भी
है इन्हीं स्कूल जाते बच्चों पर
नहीं है कोई मसीहा बाहर से
इनकी अवस्था सुधारने।
फिर किसका कर रहे हैं इंतजार,
ये स्कूल जाते बच्चे?
—गांव के स्कूल जाते बच्चे?

जानो भारत का इतिहास

(सातवीं किस्त)

O अभिनव

अब तक आप ने पढ़ा ... उत्तर–वैदिक काल में हुए आर्थिक और भौतिक विकास के बारे में। अब आगे.....

उत्तर–वैदिक काल में आर्यों की सामाजिक व्यवस्था

पिछले अंक में हमने पढ़ा था कि उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू. से 600 ई.पू.) में कई आर्थिक और प्रौद्योगिकीय विकास हुए। कृषि लगातार विकसित होती गई और और घुमन्तू जीवन मंच से नेपथ्य में चला गया। कृषि के विकास के साथ ही स्थिर जीवन (Sedentary life) की संस्कृति मजबूत होती गई। गेहूं और चावल पैदा किया जाने लगा था और इंसान भोजन की तलाश में शिकार और कंद–मूल के लिए जंगलों में मारे–मारे फिरने के लिए उतना बाध्य नहीं था।

इस स्थिर जीवन के साथ चारों वर्णों के बीच की दूरी बढ़ने लगी और यह बंटवारा मजबूत होता चला गया। ये चार का विभाजन था–पुरोहित, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण पुरोहितों के सोलह वर्गों में से एक वर्ग था, मगर यज्ञ और कर्मकाण्ड के बढ़ते जाने के कारण वे सबसे ताकतवर वर्ग के रूप में उभरे और सामाजिक और राजनीतिक विशेषाधिकार प्राप्त करने लगे। यह विशेषाधिकार उन्हें अपने संरक्षक क्षत्रियों द्वारा प्राप्त होता था। क्षत्रिय योद्धा होते थे और उन्हें समाज के रखवाले का दर्जा प्राप्त था। वैश्य कृषि, व्यापार और शिल्प के कामों में लगे थे। शुरुआत में किसानों की आबादी के सबसे बड़े हिस्से का निर्माण वैश्य ही करते थे, जबकि आज का वैश्य समुदाय व्यापार में लगा हुआ है। ये तीन वर्ण **द्विज** की श्रेणी में आते थे। द्विज का मतलब होता है दो बार जन्म लेने वाला। एक जन्म तो वह होता था जब वह मां के पेट से जन्मता है और दूसरा वह जब उसका जनेऊकरण और नामकरण हाता है। चौथा वर्ण था शूद्रों का। वे द्विज नहीं होते थे। उनका कर्त्तव्य बाकी तीन वर्णों की सेवा माना जाता था। मेहनत–मशक्कत करने वाली आबादी शूद्रों की ही थी। उनसे गुलामी करवाने जैसी कोई प्रथा प्रचलन में नहीं थी मगर निश्चित रूप से उन्हें द्विज वर्णों से कम अधिकार प्राप्त थे। स्त्री दासियों का उल्लेख तो प्राचीन ग्रंथों में मिलता है मगर पुरुष दासों की संख्या इतनी नगण्य रही होगी कि उनका उल्लेख बिरले ही मिलता है।

इससे यह बात भी उभकर सामने आती है कि आर्थिक गतिविधियों में पुरुष का वर्चस्व स्थापित होने के साथ ही स्त्री की सामाजिक स्थिति में भारी
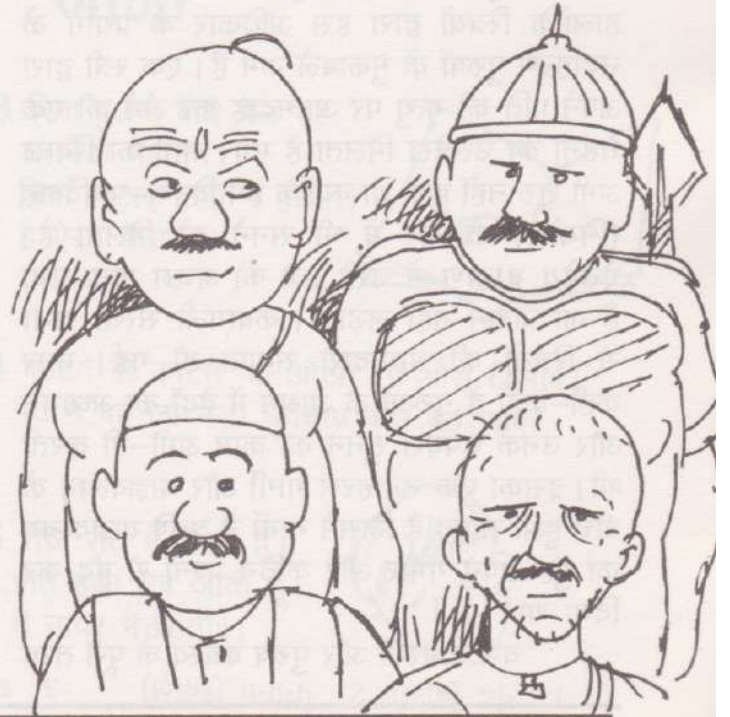
गिरावट आई। पुत्र के जन्म पर जश्न और पुत्री के जन्म पर मातम की प्रथा की शुरुआत हुई। अभी तक स्त्री और पुरुष दोनों ही बहुविवाह के अधिकारी थे, हालांकि स्त्रियों द्वारा इस अधिकार के प्रयोग के उदाहरण पुरुषों के मुकाबले कम हैं। एक स्त्री द्वारा अपने पति की मृत्यु पर आत्मदाह कर लेने की एक घटना का उल्लेख मिलता है मगर सती का रिवाज अभी शुरु नहीं हुआ था क्योंकि हमें विधवा–पुनर्विवाह **(नियोग)** के बारे में भी सनने को मिलता है। **ऐतरेय ब्राह्मण** में उसी स्त्री को अच्छा माना गया है जो जबान नहीं लड़ाती। कबायली संस्था **सभा** से स्त्रियों की भागीदारी समाप्त हो गई। मगर कहीं–कहीं वे गुरुओं के आश्रम में वेदों का अध्ययन और उनके उपदेश सुनने का काम अभी–भी करती थीं। इसका एक उदाहरण गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच हुआ संवाद है जिसमें गार्गी ने ऋषि याज्ञवल्क्य का मुंह अपने गंभीर और कठिन प्रश्नों से बंद कर दिया था।

वर्ण व्यवस्था और पुरुष वर्चस्व के पूरी तरह जड़ें जमा लेने के बाद तमाम रिवाजों और दस्तूरों की शुरुआत हुई। जैसे अब एक ही **गोत्र** (गोत्र के बारे में जानने के लिए पिछली किस्तों को देखें) के सदस्यों के बीच विवाह नहीं हो सकता था। ऊंचे वर्ण के पुरुष निम्न वर्ण की स्त्रियों से विवाह कर सकते थे मगर उच्च वर्ण की स्त्रियाँ निम्न वर्ण के पुरुषों से विवाह नहीं। ब्राह्मण और क्षत्रिय शासक वर्ग का रूप धारण करने लगे। अभी तक चारों वर्णों में साथ खाने–पीने को लेकर भेदभाव विकसित नहीं हुआ था मगर आगे चलकर यह भी हुआ। छुवा–छूत जैसे घटिया सामाजिक विभाजन पैदा हो गये। चार वर्णों से बाहर की जातियों जैसे चंडाल आदि को अभी से ही हेय दृष्टि से देखा जाने लगा।

यह था उत्तर–वैदिक काल में हुए सामाजिक विकास एक संक्षिप्त ब्यौरा। राजनीतिक विकास काफी महत्त्वपूर्ण था और कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का विकास हुआ जिसने भारत के राजनीतिक इतिहास की पूरी धारा को ही एक नई दिशा दी। इसके बारे में हम अगले अंक में पढ़ेंगे। **(क्रमशः)**

पहेलियाँ?

1. लंबी दौड़ लगाती हूँ
मै नभ को छू जाती हूँ
रंगबिरंगी कितनी सारी
बहनों से मिल आती हूँ।

2. महीने भर में आता हूँ
लाता संग उजाला हूँ
सबके मन को भाता हूँ
सिर पे नजर मैं आता हूँ।
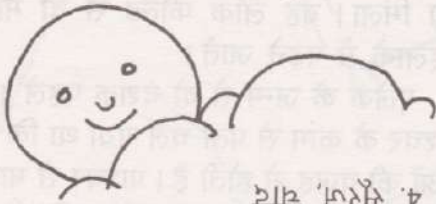
3. मैं उगा सूरज के संग
मैं चला सूरज के संग
सूरज जब घर जाएगा
मै भी बंद हो जाऊँगा।

4. चार भाई पर
संग न चलते
दोनो ही उजाला देते

1. पतंग 2. पूर्णिमा का चाँद 3. सूरजमुखी 4. सूरज, चाँद

बूझो तो जानें!

1 बिना पैर के बिना परों के।
मैं ऊपर मँडराती।।
बच्चों के हाथों पा थपकी।
उनका मन बहलाती।।

3 बिना बुलाए बीच पेज पर
आ बैठा मेहमान।
बिना मिटाए कभी न हटता।
है ऐसा शैतान।।

2 सीधी रेखा तुम चाहो।
तो करो मेरा उपयोग।।
सीधे चलना, सीधे रहना
है मेरा उद्योग।।
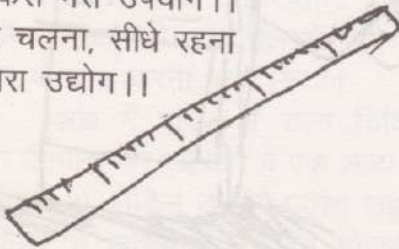
4 काटते ही काटते जो आँखों में आँसू दिलाए।
पेट में वह जा भला चुपचाप कैसे बैठ जाए?

5 रोज रात में आती हूँ।
प्रात हुआ तब जाती हूँ।
मैं ऊपर मँडराती।।

1. गेंद (बाल) 2. पैमाना (स्केल) 3. धब्बा 4. प्याज 5. नींद

ज्ञान–विज्ञान

वैज्ञानिक एलेक्जैण्डर फ्लेमिंग

वैज्ञानिक एक ऐसा नियन्ता है, जो दुनिया के बदल डालने की क्षमता रखता है। प्राणीमात्र का यह जीवन रक्षक शरीर को रोगमुक्त कर देता है। उसे स्वस्थ और ऊर्जावान बनाता है, उसमें सक्रियता भर देता है, और हताश मनुष्य के विचारों में क्रान्ति लाकर एक नये युग का सूत्रपात करता है।

चार्ल्स डारविन, एलबर्ट आइंसटीन, जेम्सवॉट, राइट बन्धु, टॉमस एडीसन, आइज़क नयूटन, गैलीलियो, मारकोनी, ग्राहम बेल, योहान्न गुटनबर्ग और एलेक्जैंडर फ्लेमिंग आदि ऐसे ही वैज्ञानिक थे, जिन्होंने अपनी खोजों और प्रयोगों की सफलता से इस दुनिया को बदल डाला। इस युग को एक नया जन्म दिया।

कुछ समय पहले तक अस्पताल ऐसे मरीजों से खचाखच भरे रहते थे, जो शरीर में खुले तौर पर विचरण करने वाले रोगाणुओं की वजह से खतरनाक इंफेक्शन का शिकार हो जाते थे। महिलाओं की प्रसव के दौरन, और बच्चों की जन्म लेते ही मृत्यु हो जाती थी। बच्चे स्कारलेट ज्वर की वजह से, हड्डियों, गले, पेट, मस्तिष्क तथा फोड़े–फुंसियों में फैलने वाले इंफेक्शन से काल का ग्रास बन जाते थे। मामूली खरोंच भी घातक साबित होती थी। लेकिन आज ये बीमारियां अतीत की बात बन गई है।

एलेक्जैंडर फ्लेमिंग ऐसे ही एक वैज्ञानिक थे, जिन्होंने रोगाणुओं से रोग निरोधक औषधि का आविष्कार किया। यह चमत्कारिक औषधि पेनिसिलिन है।

एलेक्जैण्डर फ्लेमिंग का जन्म 6 अगस्त 1881 ई0 स्काटलैण्ड के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित ऐरशायर के पहाड़ी इलाके में हुआ था। एलेक के पिता ने लॉक फील्ड नामक फार्म एक स्थानीय जमींदर से पट्टे पर लिया था। यहाँ उन्होंने भेडें व अन्य मवेशी पाले, और कुछ फसलें उगाईं। यहाँ अक्सर बर्फीले तूफान उठते रहते, जिनके दौरान भेडें, तथा अन्य मवेशी पलक झपकते बर्फ में दब जाते। फार्म हाऊस के ऊपर एक विशाल चरागाह था, तथा उससे आगे का क्षेत्र झाड़ियों व बंजर भूमि से घिरा था। फ्लेमिंग का परिवार काफी बड़ा था, और अभी एलेक सात वर्ष का का ही था कि उसके पिता की मृत्यु हो गयी। छोटे होने के कारण फार्म की देख–रेख करने, मवेशी चराने और नदी में मछलियां पकड़ने जैसे छोटे–मोटे कामों की जिम्मेदारी एलेक को दी गई, जिससे इसे प्रकृति का अधिकाधिक सानिध्य मिला। वह लॉक फील्ड से दो मील दूर बंजर इलाके में पढ़ने जाते।

एलेक के जन्म से दो दशक पहले 1860 में लुई पाश्चर के काम से पता चल गया था कि बीमारी रोगाणुओं की वजह से होती है। पाश्चर से मार्गदर्शन पाकर वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि व्यक्ति के शरीर में कमज़ोर रोगाणुओं से तैयार टीके का इंजेक्शन लगाया जा सकता है। इससे शरीर में उस बीमारी से मुकाबला करने की प्रतिरोधक क्षमता पैदा

करने में मदद मिल सकती है।

1867 में लिस्टर ने पता लगाया कि इंफेक्शन रोगाणुओं की वजह से फैलता है, और जख्मों की सफाई व ऑपरेशन के औजारों को रोगाणुमुक्त करने के लिए कार्बोलिक अम्ल का इस्तेमाल किया जा सकता है।

1894 में एली मोचिन कोफ ने दिखलाया कि श्वेत रक्तकणिकाएं रोगाणुओं को निगल लेती है। 1895 एलेक अपने भाई टॉम के पास लंदन आ गए, स्कूली शिक्षा प्राप्त की। 1897 में उन्होंने एक शिपिंग कम्पनी में क्लर्क की नौकरी कर ली। और 1901 में एलेक ने लंदन के सेंट मेरी स्कूल की प्रवेश परीक्षा पास कर ली। 1906 में एलेक ने मेडिकल अंतिम वर्ष की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली, और गर्मियों में सेंट मेरी अस्पताल में एग्रोथ राइट के विभाग में काम करना शुरू किया।

1909 में एलेक ने शल्य चिकित्सक की परीक्षा भी पास कर ली और वे एक शल्य चिकित्सक बन सकते थे, लेकिन उन्होंने एग्रोथ राइट के कार्य एवं शैली से अत्यधिक प्रभावित होकर राइट के विभाग में ही कार्यरत होने का निश्चय किया।

1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो गया। फ्लेमिंग ऐग्रोथ राइट की टोली के साथ फ्रांस रवाना हुए, जहाँ उन्होंने दयनीय स्थिति में पड़े घायल सैनिकों का इलाज किया।

23 दिसम्बर 1915 को एलेक छुटियों में घर गए। इस समय उनकी उम्र 34 वर्ष की थी, उन्होंने सैली मैकएल्रॉय (सैरीन) से विवाह किया। 4साल बाद वे लन्दन वापस आये। 1921 में सैरीन और एलेक ने सफोक में अपना मकान खरीदा। एलेक जो भी काम करते उसे अपनी नोट बुक में दर्ज कर लेते। 21 नवम्बर 1921 में उनकी पहली महत्त्वपूर्ण खोज, 'लाइसोजाइम प्रशंसित हुई और इस दिशा में उनके काम की तेजी से शुरूआत हुई। 1924 में फ्लेमिंग के बेटे राबर्ट का जन्म हुआ।

सितम्बर 1928 को एलेक ने पेनिसिलिनियम फफूंद की खोज की। उसी वर्ष वे सेंट मेरी अस्पताल में मेडिकल कालेज में जीवाणु विज्ञान के प्रोफेसर बने।

1929 में एलेक ने फफूंद से विकसित

अपनी नई खोज का नाम **पेनिसिलिन** रखा।

1935 में गेरहाई डोमाक द्वारा "प्रोंटोसिल" नामक रंजक की खोज की गई, जिसे चुहियों को खिलाये जाने या उन्हें इसका इंजेक्शन लगाने से "स्ट्रोप्टोकॉफी" रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद "सल्फोनैमाइड्स" जैसे तत्वों का विकास हुआ, जो कुछ–एक रोगाणुओं को नष्ट कर सकते थे। इनका कभी–कभी शरीर पर विपरीत प्रभाव भी पड़ता था।

1940 के मार्च महीने में ऑक्सफोर्ड की टोली के सदस्य अनर्स्ट चैन द्वारा जानवरों पर परीक्षण करने के लिए कत्थई रंग के पाउडर के रूप में पर्याप्त मात्रा में पेनिसिलिन तैयार की गई। 25 मई को हावर्ड फ्लोरी ने पाँच चुहियों को सफलतापूर्वक पेनिसिलिन के इंजेक्शन लगाए। 2 सितम्बर को फ्लेमिंग ने पहली बार ऑसफोर्ड की टोली का पेनिसिलिन संबंधी प्रयोग कार्य देखा। 1941 में डन स्कूल स्थित "कारखाने" ने इतनी मात्रा में पेनिसिलिन का उत्पादन कर लिया था, कि यह मानव पर पहला परीक्षण करने की योजना के लिए काफी था। 12 फरवरी को ऑक्सफोर्ड की टोली द्वारा एल्बर्ट एलेक्जैंडर का पेनिसिलिन से उपचार किया गया जो गुलाब की झाड़ियों की रगड़ से इन्फेक्शन का शिकार हो गया था। 15 मार्च को एल्बर्ट एलेक्जैंडर की मृत्यु हो गई, लेकिन इसके बाद आगे किये गए परीक्षण सफल रहे।

6 अगस्त 1942 को फ्लेमिंग ने इंजेक्शन के जरिए लैंबर्ट की रीढ़ की हड्डी के गिर्द तरल पदार्थ में पेनिसिलिन का इंजेक्शन लगाया, और मृत्यु की घड़ियां गिनने वाला मरीज चमत्कारी ढंग से पूरी तरह स्वस्थ हो गया।

जुलाई 1944 को एलेक्जैंडर फ्लैमिंग को अपनी पेनिसिलिन की खोज के लिए 'नाइट' की पदवी से सम्मानित किया गया। सर एलेक्जैंडर फ्लेमिंग के अतिरिक्त औषधि के रूप में पेनिसिलिन का विकास करने के लिए हावर्ड फ्लोरी को भी 'नाइट' की पदवी से सम्मानित किया गया।

पेनिसिलिन के बाद पहले नए एंटीबायोटिक 'स्ट्रेप्टोमाइसिन' का विकास हुआ। इसके बाद अन्य दूसरी फफूंदों से ऐंटीबायोटिक औषधियों का विकास हुआ।

1945 में चौंसठ वर्षीय फ्लेमिंग और फ्लोरी संयुक्त रूप से चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किये गये।

1964 में एग्रोथ के सेवानिवृत्त हो जाने पर फ्लेमिंग सेंट मेरी अस्पताल, लंदन के टीका विभाग के निदेशक बने। 28 अक्टूबर 1949 को फ्लेमिंग की पत्नी सैरीन फ्लेमिंग का एक रहस्यमय बीमारी से निधन हो गया।

1955 में सर एलेक्जैंडर फ्लेमिंग का 74 वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

इस प्रकार एक ऐसा रोगाणु विज्ञानी जिसने रोगाणु संवर्धन को एक खेल महसूस किया, अपने साथियों और छात्रों को जो प्रयोगशाला में आते उनके मनोंरजनार्थ रोगाणुओं से चित्राकृतियाँ बनाते। इनसे मिलने वाले आनन्द का ही परिणाम था कि वे सतत् काम में लगे रहने पर भी थकावट या बोझ नहीं महसूस करते थे। और करोड़ो लोगों की जीवन रक्षा करने वाली चमत्कारी औषधि पेनिसिलिन के खोज करने में सफल हुए।
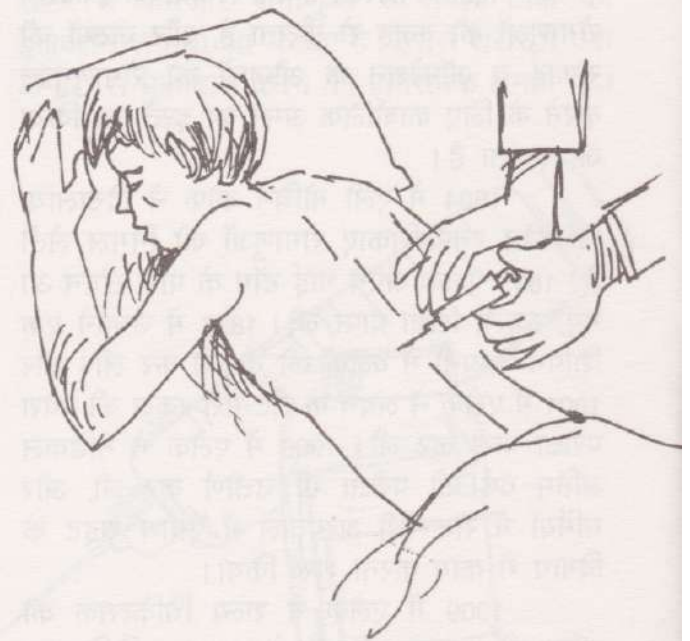
बाल मंच

लालची नेता और ईमानदार जनता

जब लालची नेता रात को सोते वक्त सपना देख रहा था, उसने सपने में देखा कि उसका घर सोने से चमक रहा था। तभी लालची नेता की आँखें सुबह होते ही खुल गई, वह सोच रहा था, काश मेरे पास इतना सोना होता, तभी से वह ईमानदार जनता को लूटने लगा, और बहुत से चोर, डाकू रखने शुरू किये। लालची नेता के खिलाफ कोई विरोध करता तो उसको लालची नेता के चोर, डाकू मौत के घाट उतार देते थे, तभी से कोई भी जनता के लोग उस लालची नेता से डरते थे।

एक महीना बीत गया ओर ईमानदार जनता पर लालची नेता के चोर–डाकुओं के अत्याचार बढ़ते गये। अब लालची नेता के पास खूब सारा धन इकठ्ठा हो गया। उसका लालच बढ़ता गया और अब तो वह खून खराबा करने लगा। अब ईमानदार जनता भी लालची नेता के सामने वोट लेकर नहीं जाती थी, अब जनता ने सोचा कि लालची नेता के खिलाफ लोगों को जुटकर विरोध करना चाहिए। अब ईमानदार जनता ने लालची नेता के चोर, डाकुओं को मार गिराया, फिर लालची नेता को भी एक दिन मार गिराया और जनता का लुटा हुआ माल वापस मिल गया।

हमें जीवन में कभी लालच नहीं करना चाहिए 'लालच बहुत बुरी चीज है' कि कहा जाता है कि ' अच्छे काम करेंगे हम सब तो अच्छा पायेंगे, बुरा करेंगे अगर किसी का तो निश्चय पछतायेंगे '। अगर लालची नेता ने ईमानदार जनता के साथ अच्छा किया होता तो वह पछताता नहीं। जैसे–यदि हम बबूल बोयेंगे तो आम कैसे खायेंगे?

• अमिताभ सिंह
कक्षा – 6

पढ़ें या रटें !

टीचर कहती हैं कि यह चैप्टर याद कर लेना। ऐसे ही एक दिन मैं शाम को रट रही थी तभी भैया के दोस्त आये, उन्होंने पूछा "क्या पढ़ रही हो?" मैंने तुरन्त उन्हें कोई उत्तर ही नहीं दे पायी फिर पेज पलट कर देखा और बताया कि ये हल्कू वाली कहानी है उसी के क्वेश्चन–आन्सर याद कर रही हूँ। वो झट से बोले **पूस की रात** ये तो बहुत अच्छी कहानी है। किस तरह हल्कू मालिक के खेत की रखवाली करने के लिए अपने कुत्ते के साथ कड़ाके की ठंड वाली रात बिताता है। उन्होंने मुझे पूरी कहानी सुनाई और मुझे झट से सारे

क्वेश्चन–अन्सार याद हो गये। यानि हम समझ कर पढ़ेगें तो कुछ भी नहीं भूलेंगे। वो चीज हमेशा याद रहेगी।

मेरे एक्जाम खत्म हो गये हैं मगर मुझे अभी भी याद है कि गरीब किसान हल्कू के पास इतनी ठंड में एक भी कम्बलब नहीं था।

• गीतू , कक्षा–9
सी.एम.एस., राजेन्द्र नगर
लखनऊ

जीवन साथी

वह दोपहर का समय था, जब मैं स्कूल से आई। स्कूल से आते ही मुझे उसकी इच्छा होने लगी। अतः वह जैसे ही मेरे सामने आया, मैं खुशी से झूम उठी। उसके बाद मुझे नींद आने लगी और मैं सोने चली गई। पर जब मैं सो कर उठी तो मुझे उसकी इच्छा फिर होने लगी। उन दिनों पता नहीं मुझे क्या हो गया था कि उसकी इच्छा मुझे बहुत होती थी। परन्तु, मेरे माता और पिता हमेशा मुझे समझाते थे कि हर चीज की एक हद् होती है, उसी हद में रहकर हर काम करना चाहिए। परन्तु फिर भी मैंने उसकी इच्छा कम न की।

जानते हैं, वह मेरा जीवन साथी कौन है? आप सब जानते हैं उसे वह महाशय कोई और नही बल्कि "भोजन" है।

• गार्गी कक्षा–9, गोरखपुर

नन्हीं पेंसिल ने बनाया
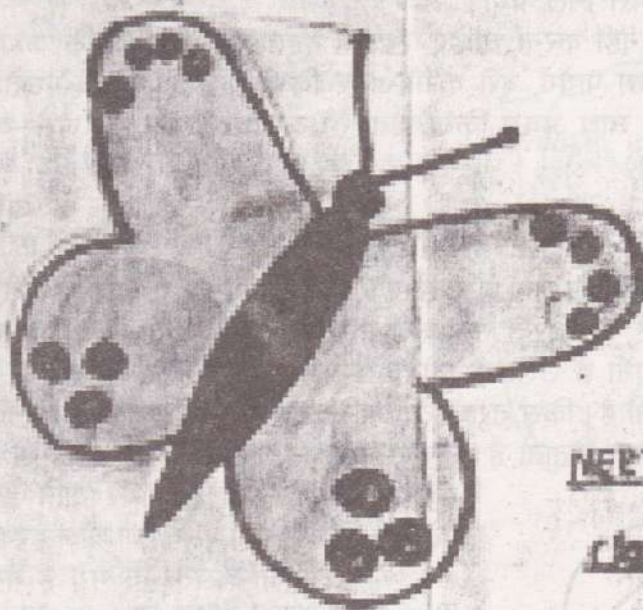
नन्हीं कलम से...

इस दीवानी गरमी से

फिर तो बुरा हाल हुआ
इस दीवानी गरमी से
जीना भी मुहाल हुआ
इस दीवानी गरमी से।
पहले मैंने सोचा शायद
गर्मी एक दो पल की है,
अभी–अभी नासमझ
ये बालिका कल की है।
लेकिन भ्रम टूटा मेरा
देख इसकी हठधर्मी से,
फिर तो बुरा हाल हुआ
इस दीवानी गरमी से।
बरखा रानी बरस न पायी
लोग बेचारे त्रस्त हुए,
गरमी–गरमी, पानी–पानी
कहते–कहते पस्त हुए।
जीव–जन्तु पर कहर ढा
हँसती रही बेशरमी से,
फिर तो बुरा हाल हुआ
इस दीवानी गरमी से

• खेमकरण 'सोमन'
कक्षा–12, रुद्रपुर
ऊधमसिंह नगर

प्रदूषण

प्रदूषण है हमारा दुश्मन,
कौन खतम कर पाएगा।
धुआं, ध्वनि खतम करे जो,
वो देश विजय कहलाएगा।।
जमीं बनेगी हमारी बंजर,
कौन इसे बचाएगा।
जल मांगेगी धरती हमसे,
जल हमें न मिल पाएगा।
जंगल कटेंगे व वृक्ष मरेंगे,
कौन उन्हें उगायेगा।
एसा ही अगर रहा दुनिया में,
जग में सन्नाटा छा जाएगा।।
प्रदूषण है हमारा दुश्मन,
कौन खतम कर पाएगा।
जानवर मरेंगे, मानव मरेगा,
कोई न रह जाएगा।
कंकाल ही कंकाल दिखेंगे,
देखने वाला न रह जाएगा।।
प्रदूषण है हमारा दुश्मन
कौन खतम कर पाएगा।
धुआं, ध्वनि खतम करे जो,
वो देश विजय कहलाएगा।

• राधेश्याम विनोदिया

नई कलम से...

बस्ता

बस्ते का है बोझा ज्यादा
और हमारा वजन है आधा,
ज्यों गधे ने ढोयी लादी,
हमने भी है इसको लादा।
ऊपर से बोतल पानी की,
आ गई याद हमें नानी की।
झुकी कमर लेकर हम जाएँ।
या, दादाजी से बेंत ले आएँ।
गर्मी में जब, तन झुलसे,
हवा–हवा को मन हुलसे,
तब टाई यह क्या आई,
फाँसी–सी गले लगाई।

चू रहा पसीना तन से,
ठुंसकर जाते, हम बस से।
हे! शिक्षक, पितु, माताओं,
कुछ हम पर तरस है खाओ।
यह रीति चली बेढंगी,
कुछ देशी रंग लगाओ।
यह कतरन गले न बाँधो,
बस साफ सफाई माँगो।
बस्ते को कर दो हल्का,
दफ्ती के जिल्द हटाओ।
कक्षा की, घर की कॉपी,
दोनों को एक बनाओ।
दो–चार किताबें काफी,
घर पर भूलें न आधी।
हल्के–फुल्के हम जाएं।
सरपट दौड़ें चिल्लाएँ।

●डॉ० रीता हजेला

जंगल

सिंहराज ने जंगल में आपात सभा बुलवायी,
घूम–घाम देखा जो राज्य जंगल बचा तिहाई।
ताल–तलैया सूख गए, बरखा बादल रूठ गए,
फल–फूलों का हुआ अकाल, बन्दर भालू सब बेहाल।
मानव काट रहा है जंगल, कैसे हो जंगल का मंगल,
चिन्तित सभी जानवर बैठे, महाराज का दिल भी ऐंठे।
प्रश्न कठिन उत्तर कोई सोचे, इंसानों को कैसे रोकें,
आदमी हो रहा अक्ल का अंधा, उसे सिखाऐं कैसे धंधा।
तब मैना उड़ आगे आई, बड़े पते की बात बतायी,
छोड़ दूसरों को कुछ कहना, हमें है खुद पर निर्भर रहना।
पशु पक्षी सब सामनें आएं, एक–एक पेड़ हम सभी लगाएं,
बूंद–बूंद से भरता घड़ा, जंगल फिर जो जाएगा हरा।

●डॉ० रीता हजेला

बाल कहानी

उपकार

प्रदीप विद्यालय से लौटकर घर आया तो रामू को खाना खाते देखकर उसका मूड खराब हो गया। रामू एक गरीब लड़का था। जो अक्सर खाना मांगने उसके घर आ जाया करता था। प्रदीप की मां दयालु थी, कभी उसे खाना खिला देती थी तो कभी रोटियां बाँधकर दे देती थी। यह सब प्रदीप को पसन्द कतई नहीं था। अतः उसने रामू को कई बार झिड़की भी लगाई थी कि वह उसके घर न आये, किन्तु तब भी रामू उसके घर आता रहता था। कभी-कभी वह मम्मी पर भी बिगड़ उठता- ''मम्मी, यदि इतना ही प्यार है उससे तो उसे ही बना लो बेटा! मैं नहीं रहूंगा तुम्हारे साथ।'' ''बेटा भूखे-नंगे की मदद करना हमारा कर्तव्य है। तुम नासमझी भरी बातें क्यों करते हो।'' मम्मी ने समझाने का प्रयास किया पर वह पैर पटकता हुआ बाहर चला गया।

आज थाली में खाना खाते देखकर उसका मूड खराब हो गया। रामू को घूरता हुआ वह कमरे में चला गया, रामू सहम गया। जैसे-तैसे खाना खाकर चला गया वह। मम्मी ने उसे कुछ छुट्टे पैसे भी दे दिए। "प्रदीप खाना खा लो।" अभी मम्मी ने आवाज दी ही थी। तो वह बोला-''नहीं हरगिज आज खाना नहीं खाऊंगा। ''अरे क्या हो गया तुम्हें, खाना क्यों नहीं खाओगे!'' मम्मी ने हैरानी से पूछा- ''तेरे पेट में तो चूहे कूदने लगते थे, देर होने पर। आज क्या बात हो गई?'' तब उसने स्पष्ट किया- "मैं आज से घर में हरगिज खाना नहीं खाऊंगा। रामू को खाना खिलाकर तुमने बर्तन गंदा कर दिया है। क्यों बुलाती हो उसे।" मम्मी ने पुनः उसे समझाने का प्रयत्न किया- बेटा, उसकी थाली मैंने अलग रख दी है। फिर वह भी तो इंसान है, गरीब है तो क्या हुआ। मनुष्यों की पहचान कर्मों से होती है, अमीरी-गरीबी से नहीं। प्रदीप ने कोई उत्तर नहीं दिया और पार्क में खेलने चला गया। मम्मी चिंतित हो गई। कैसे समझाये उसे। उधर प्रदीप खेलने लगा तो रामू वहाँ आकर उसका खेल देखने लगा। तभी उसकी गेंद उछलकर रामू के पास जा गिरी। उसने लपककर गेंद को प्रदीप की ओर उछाल दिया। इस पर क्रोधित हो प्रदीप ने उसे तमाचा जड़ दिया- "क्यों हाथ लगाया मेरी गेंद को।'' "गलती हो गई बड़े भैया।" और रामू गाल सहलाता हुआ वह चला गया! अगले दिन वह प्रदीप के घर नहीं आया। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया, किन्तु मम्मी चिंता में थी। दिन बीतते रहे। रामू ने आना बंद कर दिया था एक दिन प्रदीप सब्जी लाने साईकिल से बाजार जा रहा था। सब्जियां लेकर जब वह लौट रहा था तो रास्ते में एक मोटर साइकिल ने उसे धक्का मार दिया, जिससे वह गिर पड़ा। शरीर अनेक जगहों पर छिल गया। वह कराहने लगा। लेकिन उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था। अचानक रामू दौड़ा-दौड़ा आया और उसे डाक्टर के पास ले गया। प्रदीप को डाक्टर के हवाले कर उसने उसकी मम्मी को सूचना दी। मम्मी फौरन वहाँ पहुंच गई। प्रदीप को चोटें अधिक लगी थीं, वह कराह रहा था।" देख लिया न छोटे, गरीबों का उपकार।" "हां, मां सचमुच रामू भगवान है, अब मैं कभी उससे घृणा नहीं करूंगा। कराहते हुए उसने कहा- "रामू स्वार्थी नहीं है।" उसका दृष्टिकोण बदल चुका था। पास ही खड़ा रामू अब भी भयभीत था- पता नहीं उसे प्रदीप क्या सजा देगा। परन्तु प्रदीप ने उठकर उसे सीने से लगा लिया "क्षमा कर दो रामू।" आंखें भर आई थी। रामू के उपकार ने उसे छोटा बना दिया था।

●मोहम्मद मुमताज हसन
गया (बिहार)

नन्हीं पेंसिल ने बनाया...

नीतू साहनी

अक्षरा दत्त
कक्षा-6हल्द्वानी

संदीप
कक्षा -5
रुद्रपुर
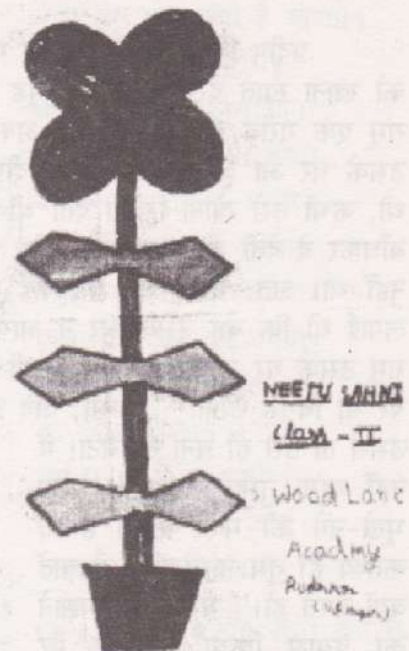
बाल कथा

दिलेर बिल्ली

एक पालतू बिल्ली थी। वह एक अमीर आदमी के घर में रहती थी। बिल्ली देखने में बहुत सुन्दर थी। वह आदमी और उसके परिवार के लोग बिल्ली को बड़ा प्यार करते थे। जहाँ जाते उसे ले जाते। घर में उसके खाने के लिये तरह-तरह का स्वादिष्ट भोजन परोसा जाता था। बिल्ली आरामदेह गद्दे पर सोती थी।

अमीर आदमी के दोस्त या मेहमान आते तो बिल्ली उनके गोद में झट चढ़ जाती। निडर बिल्ली के मुलायम बालों को सहलाकर वे लोग खुश हो जाते। अमीर आदमी बिल्ली की प्रशंसा मेहमानों से जरूर करता।

ऐशो आराम की जिन्दगी पाकर बिल्ली फूले नहीं समाती। वह अन्य पशुओं को तुच्छ समझती।

एक दिन की बात है। वह मकान के पीछे वाले खिड़की पर बैठी थी। मकान के पीछे नालियों के किनारे हरी-हरी घास उगी थी। एक बूढ़ी गाय उसको चर रही थी।

बिल्ली को शरारत सूझी। उसने बड़े रौब से गाय से पूछा, 'मेरे मालिक के मकान के पीछे वाली घास क्यों चर रही हो?'

गाय ने घास चरना छोड़कर स्वामिभक्त बिल्ली की तरफ देखा।

गाय बोली, 'बहन, ये घास तुम्हारे मालिक के काम की नहीं है। घास चरने से यहां सफाई हो जा रही है और मेरी भूख भी मिट जा रही है।

बिल्ली गाय की बातें सुनकर नरम पड़ गई। कुछ सकुचाते हुए बोली, 'बहन, तुम्हारा मालिक नहीं है? क्यों वह तुम्हें चारा-पानी नहीं देता?

गाय बोली, 'जब मैं जवान थी तब मेरा मालिक, मुझे खूब अच्छा-अच्छा चारा खिलाता था। रोज स्नान कराता था। मेरी सेवा-सुश्रुषा करता रहता था। मैं भी रोज बाल्टी भर-भर कर दूध देती थी। वह दिन बड़े आराम के दिन थे। अब मैं बूढ़ी हो गई हूं। दूध नहीं देती। मेरा मालिक, मुझे अपने घर से भगा दिया है। उसने नयी दूध देने वाली गाय रख ली है।

बिल्ली बोली, 'यह तो बुरी बात है।' गाय बोली, 'अभी तो मेरा मालिक मेरे पर रहम कर गया है, नहीं तो बांझ होने पर कई-कई ग्वाले अपने-अपने दुधारू पशुओं को कसाई के हाथों बेंच देते हैं। उसने मुझको आवारा छोड़ दिया है।'

बिल्ली बोली, 'कसाई क्या करते हैं? गाय बोली, 'कसाई, कसाईखाने में ले जाकर पशुओं का वध करते हैं, उनका मांस, चमड़े, हड्डियां सब बेच देते हैं।'

बिल्ली दु:खी होकर बोली, 'मनुष्य बड़ा लोभी है। हम पशुओं पर बड़ा अत्याचार करता है।'

गाय चुपचाप घास खाने लगी। थोड़ी ही देर में टॉमी नाम का एक बूढ़ा आवारा कुत्ता आया। कुत्ते को देखकर बिल्ली गुर्रायी।

गाय बिल्ली को शान्त करते हुए बोली 'बहन, यह मेरा भाई है। हम दोनों शहर के बाहर जहां शहर का कचड़ा फेंका जाता है, वहाँ रहते हैं।'

बिल्ली शान्त होकर कुत्ते से बोली 'भाई,
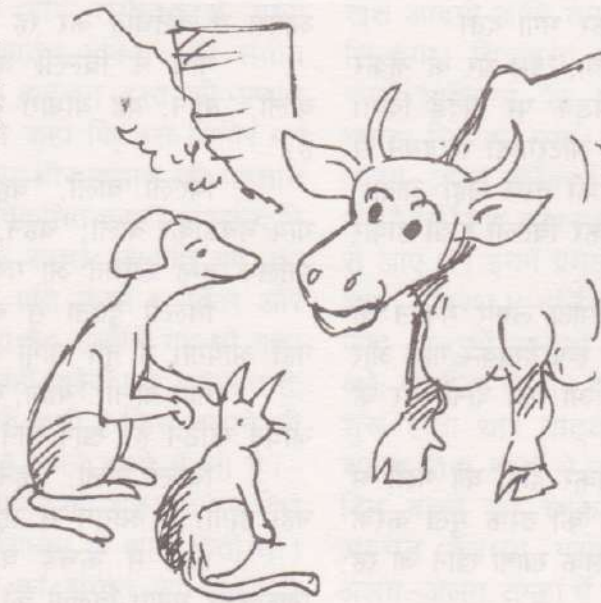
क्षमा करना।'

कुत्ता बोला, 'बहन, मैं भी पहले इसी घर में रहता था?'

बिल्ली अचरज खा गई। बोली, 'चले क्यों गये।'

कुत्ता बोला, 'बहन, इस घर के सब लोग, जब तक मैं जवान तथा सुन्दर था, तब तक मेरे प्रति दयावान थे। अपनी मोटरकारों में सैर कराते थे। तरह-तरह के पौष्टिक खाना खिलाते थे। डाग शो में ले जाते थे। मेरा करतब दिखलाते थे। पुरस्कार जीतते थे। खुश होते थे।

मगर मैं जब बूढ़ा हो गया तब वह सुन्दरता और चपलता नहीं रही। मैं जंजीरों से बंधा सोता रहता था। मालिक के दोस्त-मित्र आते मुझे देखकर कहते, क्यों मरियल और भद्दा कुत्ता पाल रखे हो। एक दिन मालकिन की बहन आई। तुम अबोध थी। वे तुम्हें इस घर में छोड़ गईं।

मेरी इस घर से छुट्टी कर दी गयी। लाड़-प्यार से पला, इस घर के स्नेह को मैं शुरू में नहीं भुला पाया। कई बार घर में आने का प्रयास किया मगर व्यर्थ हुआ। मालिक दुत्कार कर भगा देते।

एक दिन गजब हो गया, 'इस घर के नौकर ने हाथ में डंडा लेकर मुझे सड़क पर खदेड़ दिया। इस भाग दौड़ में मैं सड़क पर मोटरगाड़ी से दबने से बच गया। तब से इस मकान की तरफ नहीं आता।'

कुत्ते की कहानी सुनकर बिल्ली दुखी होकर म्यांऊ-म्यांऊ करने लगी।

घर का नौकर मोटा सोटा लेकर मकान के पिछवाड़े आया। नौकर का उग्र रूप देखकर गाय और कुत्ते को सारी बात समझ में आ गई। दोनों मार के डर से भाग खड़े हुए।

नौकर बाहर खड़ा होकर दोनों को गली में भागते देखता रहा फिर बिल्ली की तरफ मुख करके बोला, 'पूसी अन्दर जाओ, मालिक खाना खाने जा रहे हैं।'

पूसी नहीं चाहते हुए भी मालिक के डाईनिंग रूम की तरफ चली गयी।

अब पूसी को इस घर में अच्छा नहीं लगता। वह उदास रहने लगी। मालिक भी पूसी की उदासी को देखकर चिन्तित रहने लगे। पूसी की बीमारी का इलाज बड़े-बड़े पशु चिकित्सकों से कराया गया। बीमार बिल्ली ठीक नहीं हो पा रही थी।

वह दिन भर बैठी-बैठी ऊंघती रहती। बिल्ली दिनों-दिन कमजोर पड़ती जा रही थी। अंत में उसका शरीर केवल हड्डियों का ढांचा रह गया। उसके रोंएं अब मुलायम नहीं रहे, वे झड़ रहे थे।

बिल्ली को देखकर मालिक के मेहमान अब खुश नहीं होते। मालिक भी बिल्ली के बारे में शेखी नहीं बघारता।

एक दिन नौकर फाटक खुला छोड़कर घर के बाहर चला गया। बिल्ली को मौका मिला। वह घर से बाहर निकल आई।

घर के बाहर आकर उसने घर की तरफ देखा। घर को अलविदा कहा और आजादी की सांस ली।

बिल्ली गली का रास्ता पकड़ कर शहर के सबसे घिनौने जगह की तरफ चल पड़ी।

उसने शहर के कचड़े फेंकने वाली जगह में आकर देखा, गाय और कुत्ता पास-पास बैठकर आपस में बातचीत कर रहे थे।

गाय ने बिल्ली को पहचान लिया। वह बोली, 'बहन, यह बीमारों-सी क्या हालत बना ली है?'

बिल्ली बोली, 'बहन, मैं बीमार नहीं हूं।' गाय घबड़ाकर बोली, 'बहन, घर लौट जाओ, तुम्हारा मालिक तुम्हें खोजते आ गया तो हमारी खैर नहीं।

बिल्ली दृढ़ता से बोली, 'बहन, वह कभी नहीं आयेगा। मैं तुम लोगों के साथ रहने आई हूं।

गाय बोली, 'बहन, वापस चली जाओ। हमारा जीवन कठिन है। खाने-पीने की आफत है।'

बिल्ली बोली, 'बहन, मुझे यहां कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं आराम से रहूंगी।'

इतने में कचड़े के ढेर में से एक चूहा निकलकर भागा। बिल्ली को भूख लगी थी। वह दौड़ पड़ी। चूहा पकड़कर खाने लगी। गाय और कुत्ता बिल्ली के दिलेरी पर खुश हो गये। किसी ने कहा है कि पराधीन सुख सपनों नाहि।

● विजय कुमार, खटीमा

अनुराग ट्रस्ट द्वारा बच्चों के समर कैम्प का आयोजन

"... जो है इससे बेहतर दुनिया हमें चाहिए..."

"...जो है इससे बेहतर दुनिया हमें चाहिए।
सच्चे मानव जैसा जीवन जीने लायक दुनिया
या तो तुम हमको दो
या फिर उसको पा लेने की राह बताओ
उस रस्ते पर सीना ताने
आगे बढ़ना हमें सिखाओ... ।"

लखनऊ में 21 जून से 27 जून तक अनुराग ट्रस्ट ने बच्चों के एक समर कैम्प का आयोजन किया। अनुराग ट्रस्ट बच्चों और किशोरों में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वस्थ संस्कृति विकसित करने के लिए प्रयासरत है। इस बाल सर्जनात्मकता शिविर में बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

सर्जनात्मकता शिविर में बच्चों को प्रसिद्ध कलाकारों, चित्राकारों और संगीतकारों द्वारा नाट्यकला, मूर्तिकला, कार्टून-मेकिंग और संगीत का प्रशिक्षण दिया गया। अनुराग ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती कमला पाण्डेय ने कहा कि इस शिविर का उद्‌देश्य बच्चों की प्रतिभा और रुझान की पहचान करके उन्हें उस दिशा में विकसित करना, अपसंस्कृति के घटाटोप में उन्हें एक स्वच्छ संस्कृति की राह दिखाना और समाज के प्रति उनमें सरोकार और संवेदनशीलता पैदा करना है। उन्होंने यह भी कहा कि यह शिविर एक अंत नहीं बल्कि एक शुरुआत है, उस श्रृंखला की बस पहली कड़ी है जिसे चलाने की एक ठोस योजना ट्रस्ट ने अपने हाथों में ली है।

सर्जनात्मकता शिविर की शुरुआत हर दिन सुबह आठ बजे संगीत-साधना के साथ होती थी। शुरुआती दिनों में बच्चों को संगीत का बुनियादी ज्ञान दिया गया और फिर उन्हें कुछ चुनिंदा गीत सिखाए गए। संगीत प्रशिक्षण 'प्रत्यूष सांस्कृतिक मंच' से जुड़े संगीतकारों ने दिया। सिखाए गऐ गीतों में 'तू जिन्दा है, तू जिन्दगी की जीत में यकीन कर, मार्टिन लूथर किंग जूनियर का 'होंगे कामयाब, 'अपने लिए जिए तो क्या जिए,' 'पोंछकर अश्क अपनी आँखों से मुस्कुराओ तो कोई बात बने' मुख्य थे। आखिरी वाला गीत बच्चों ने साम्प्रदायिक हिंसा और जात-पात के विरोध में प्रस्तुत किया। यह विरोध गीत के इन शब्दों में साफ झलकता है-

'धर्म और नस्ल, जाति और मज़हब
जो भी है आदमी से कमतर है।
इस हकीकत को तुम भी मेरी तरह
जान पाओ तो कोई बात बनें।-'

संगीत के बाद प्रसिद्ध चित्रकार **रामबाबू** चित्रकला और कार्टून-मेकिंग सिखाते थे। रामबाबू ने यह प्रशिक्षण बहुत ही रोचक और मजेदार ढंग से दिया। बच्चों को मोटे आदमी, पतले आदमी, लम्बे आदमी, नाटे आदमी, दुखी आदमी, नाराज आदमी, खुश आदमी आदि तमाम चरित्रों का कार्टून बनाना सिखाया। चित्रकला में उन्हें प्राकृतिक भू-दृश्य, फलों, व्यक्तियों, पेड़-पौधे, चिड़िया आदि का चित्र बनाना सिखाया गया। इस सेशन के बाद बच्चों को अलग-अलग मूर्तिकारों द्वारा मूर्तिकला सिखाई जाती थी।ये मूर्तिकार लखनऊ कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स से आए थे। इनमें प्रमुख थे **डा0 रतन कुमार** और **डा0 दशरथ। मूर्तिकला** में बच्चों ने विभिन्न जीव-जन्तुओं, वस्तुओं आदि की मूर्ति बनाना सीखा। क्ले-मॉडलिंग के बाद बच्चों का नाट्य-कला प्रशिक्षण शुरू होता था। नाट्यकला का प्रशिक्षण **'प्रत्यूष सांस्कृतिक मंच'** से जुड़े रंगकर्मी दे रहे थे। पहले दिन बच्चों को रंगकर्म के बुनियादी नियमों से अवगत कराया गया। अगले दिन से उन्हें अलग-अलग समूहों में बांटकर चार नाट्य प्रस्तुतियों की तैयारी कराई गई। इनमें से दो नाटक थे 'तमाशा' और 'देश को आगे बढ़ाओ'। 'तमाशा' प्रसिद्ध रंगकर्मी सफ़दर हाशमी द्वारा लिखा गया एक नाटक है जो देश के नेताओं के चरित्र को उजागर करता है और उनके भ्रष्टाचार, मक्कारी,

स्वार्थ को बेनकाब करता है। असगर वजाहत द्वारा लिखा गया 'देश को आगे बढ़ाओ' भी भ्रष्ट नेताओं की कारस्तानियों की एक बानगी प्रस्तुत करता है। अन्य दो नाट्य प्रस्तुतियां नृत्य–नाटिका की शक्ल में थीं। इसे कम उम्र के बच्चों ने प्रस्तुत किया। पहली थी ट्रस्ट द्वारा जारी 'बच्चों का घोषणापत्र' की नाट्य प्रस्तुति। दूसरी जंग के खिलाफ एक कविता की नाट्य प्रस्तुति। यह दोनों रचनाएं 'अनुराग बाल पत्रिका' के पिछले अंक ,अप्रैल–जून, 2003 में प्रकाशित हुई थीं। सत्र के आखिरी दिन बच्चों ने इन सभी गीतों और नाटकों की प्रस्तुति अभिभावकों, मीडिया व अन्य दर्शकों के सामने की और ट्रस्ट में स्थित कला दीर्घा में बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों, मूर्तियों और कार्टूनों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। साथ ही **'किताबें कुछ कहना चाहती हैं, तुम्हारे पास रहना चाहती हैं,'** नाम से बच्चों के लिए एक पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई। समापन कार्यक्रम का संचालन **कात्यायनी** ने किया। अंत में बच्चों को पुरस्कृत किया गया और उन्हें एक सर्टिफिकेट और किताबें दी गईं। सर्टिफिकेट ट्रस्ट्र की अध्यक्षा श्रीमती कमला पाण्डेय ने दिया।

अभिभावकों ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की काफी सराहना की और बार–बार से ऐसे सर्जनात्मकता शिविर लगाने का आग्रह किया जो बच्चों के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास करें। इस शिविर के दौरान बच्चों ने जिस गति के साथ ऐसी चीजों को सीखा जो उनके लिए एकदम नई थीं, उससे ट्रस्ट के सदस्य, अभिभावक और प्रशिक्षक एकदम हैरान थे। बच्चों की सर्जनात्मकता को यदि कम उम्र से प्रोत्साहित किया जाए और उन्हें वैसा माहौल मुहैया कराया जाए तो बेशक उन्हीं में से आने वाले कल के महान चित्रकार, संगीतकार, लेखक, अभिनेता, मूर्तिकार और कलाकार उभरेंगे।

पारा कांड

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ को स्मार्ट और आधुनिक सिटी बनाने की घोषणा भी अनेक वर्षों से की जा चुकी है। लेकिन सभी कुछ एकपक्षीय या कागजी। सच्चाई तो यह है कि आज भी लखनऊ में अनेकानेक कालोनियां और हजारों निवासी खासकर बच्चे बिजली, पानी, शिक्षा, सड़क और शौचालय जैसी मूलभूत जरूरी चीजों और अधिकारों से वंचित हैं। एक ओर विशालकाय कोठियां, चमचमाती सड़कें, सभी आधुनिकतम सुख–सुविधाएं; दूसरी ओर जनसाधारण और निम्नवर्गीय कालोनियों में न बिजली–पानी है, न शिक्षा की व्यवस्था और न अस्पताल की सुविधा है और न ही निकलने के लिए सड़क। पारा कोलानी ऐसा ही एक स्थान है, जहां के बच्चों और उनके शिक्षकों, अभिभावकों व सेंट मेरी स्कूल के फादर ऑगस्टीन ने सरकार के सामने अनेक बार अपनी समस्याएं रखीं, लेकिन सरकार के कानों पर जूं भी न रेंगी, तब फादर ने सभी पारा निवासियों और अपने छात्रों; जो भविष्य में इस देश के कर्णधार बनेंगे को साथ लेकर मानव श्रृंखला बनाकर सड़क निर्माण की मांग हेतु सरकार का ध्यान खींचा, लेकिन आजादी के 56 साल बाद भी पुलिस और सरकार ने कहीं से भी सकारात्मक नजरिया नहीं दिखाया। डी.एम. के आदेश से धरना देने वालों खासकर बच्चों पर बर्बर लाठियां बरसाई गईं। शिक्षकों–अभिवावकों और फादर को जेल में डाल दिया गया–गर्भवती महिला के पेट पर पुलिस बटों का प्रहार हुआ। सड़क निर्माण का फिर भी आश्वासन नहीं दिया गया। शासन–प्रशासन के उच्चाधिकारियों ने पारा निवासियों की प्रति मागों के नाकारात्मक रुख अपनाया गरीबों, मेहनतकशों, स्त्रियों और बच्चों के लिए यह है देश एवं प्रदेश सरकार की नीति। जहां मासूम, निहत्थे बच्चों तक पर लाठियां बरसाई जाती हैं।

कार्टून कैसे बनाएं

एडोल्फ हिटलर

1.

2.

3.

4.

गोलू
ओह मैं तो इन पूहों से तंग आ गई
चिंता मत करो आंटी मैं इनके लिए बाजार से शिकारी बिल्ली लाता हूं
यह बिल्ली चूहे मारने में तो शेर है
आंटी मैं बिल्ली ले आया
अब देखना एक भी चूहा बच नहीं पाएगा
!
!
देखो बिल्ली कितनी तेजी से चूहों पर झपटी
चूहों ने तो बिल्ली पर ही हमला कर दिया

चित्र कैसे बनायें...
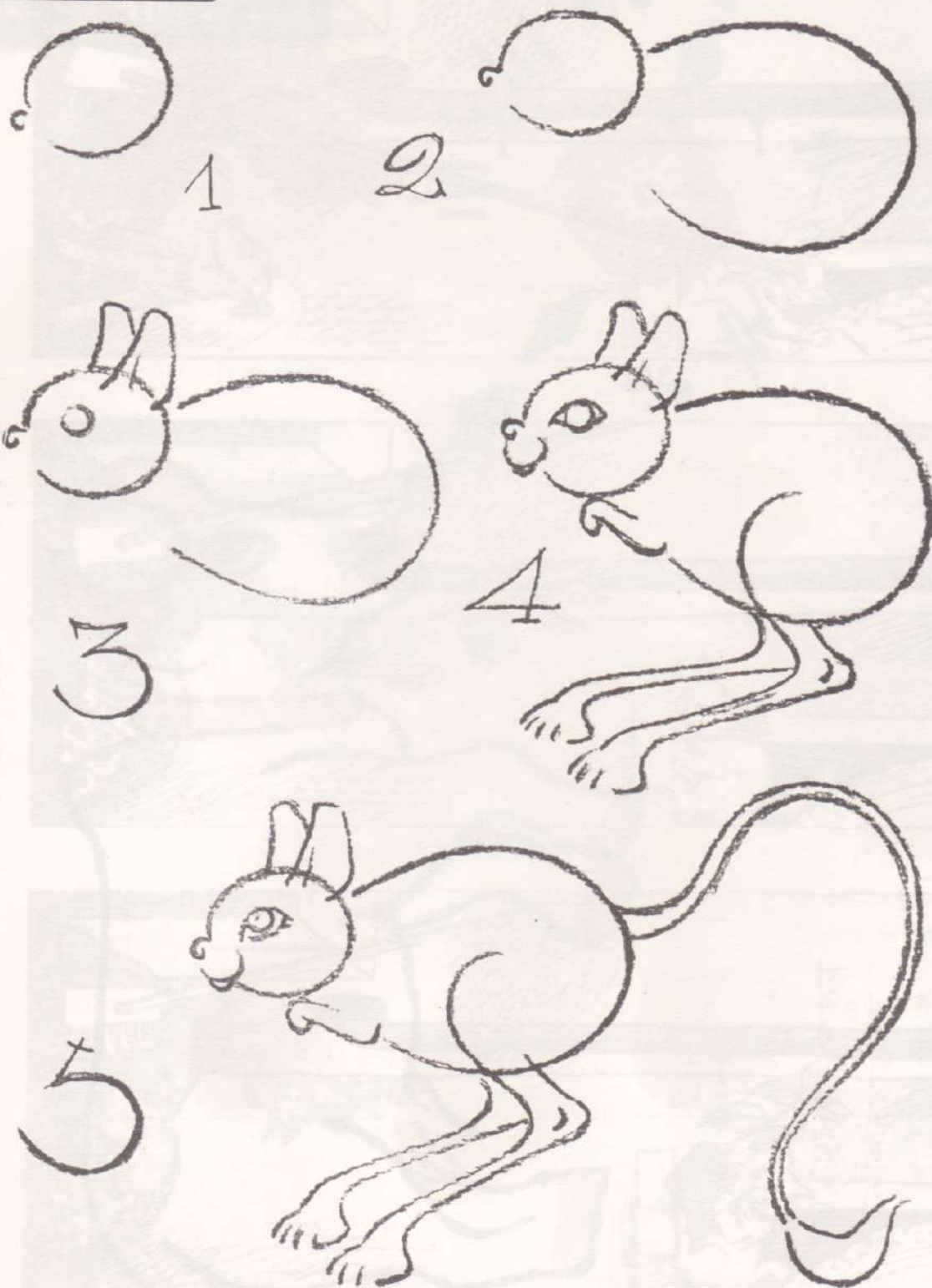
बिल्ली ने अपनी नाक कैसे घायल की
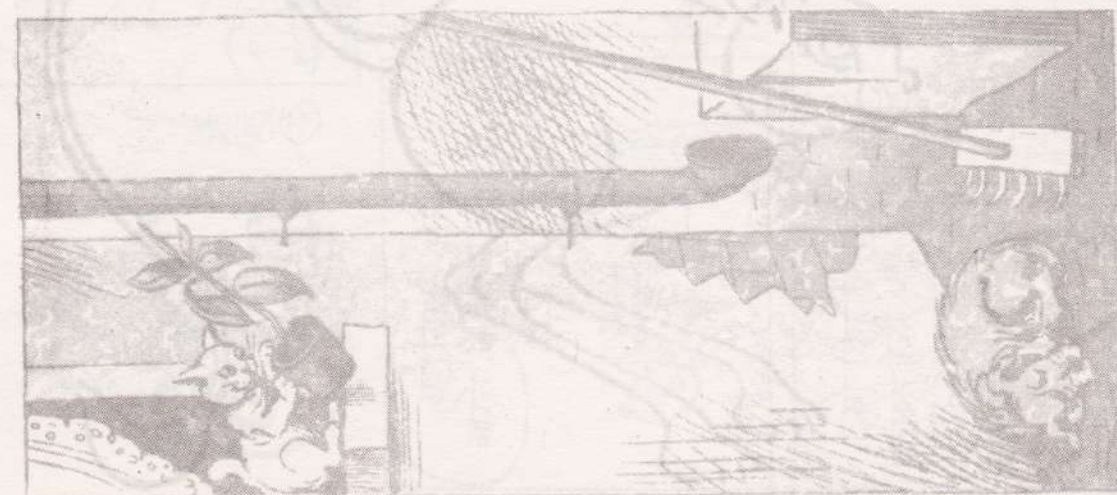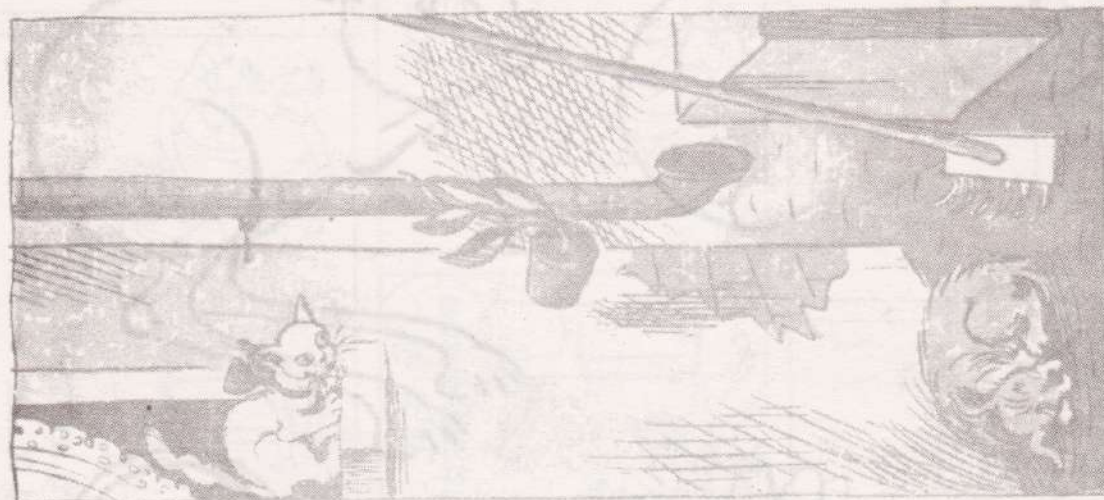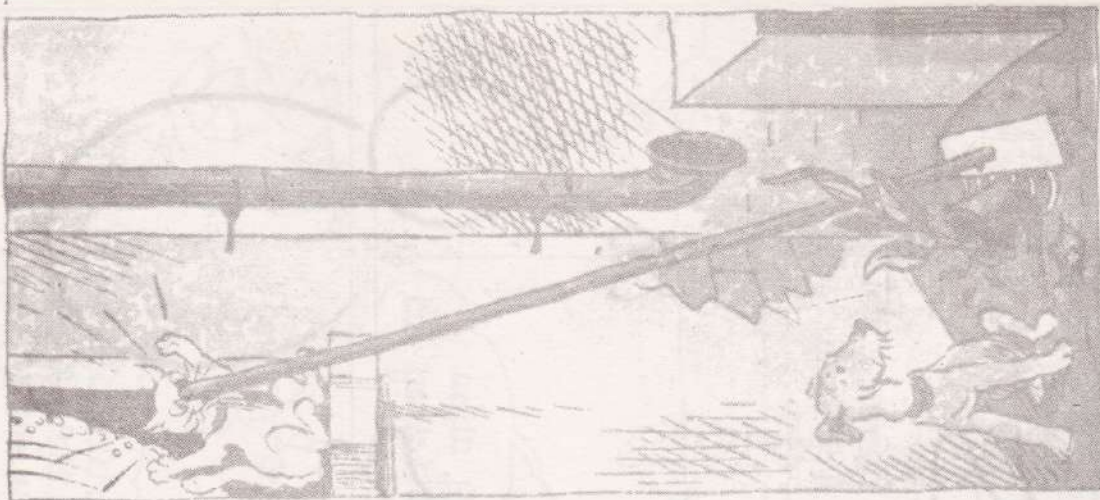
कभी-कभी ऐसा भी होता, स्वयं शरारत जो करते
अपनी हरकत से उनको ही लेने के देने पड़ते।

बालकूची . . .

रावी
अनुपम पब्लिक स्कूल
एलेनाबाद, सिरसा

बिन पुस्तक जीवन ऐसा
बिन खिड़की घर हो जैसा

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएं, प्रेरक जीवनियां, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

सोमवार से शनिवार, शाम तीन से सात बजे तक
डी-68, निरालानगर, (गोमती मोटर्स के सामने) लखनऊ-226020
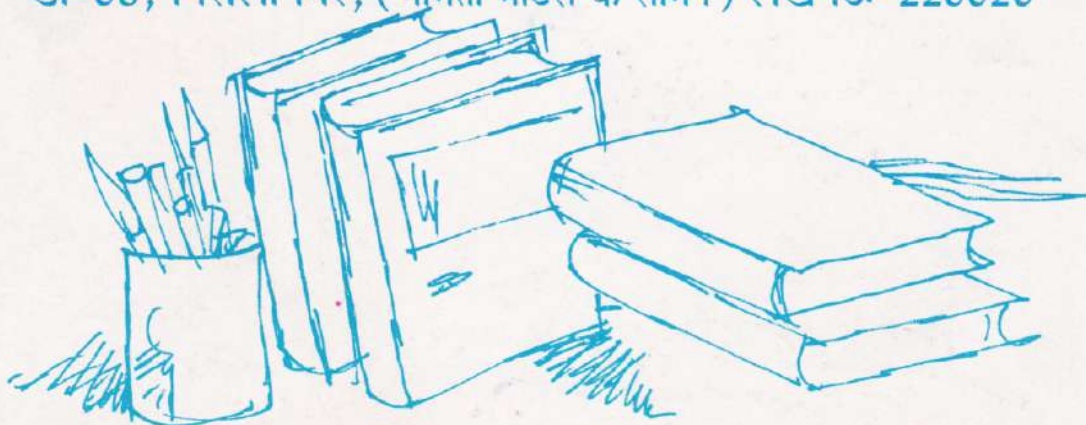
अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

पाँच नई मजेदार सचित्रा किताबें

रोजमर्रे की कहानियाँ	—होल्गर पुक्क	१० रुपये
अजीबोगरीब किस्से	—होल्गर पुक्क	१० रुपये
नये जमाने की परिकथाएँ	—होल्गर पुक्क	१० रुपये
किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफसरों का कैसे पेट भरा	—मिखाईल सल्तिकोव-श्चेद्रीन	१० रुपये
गोलू के कारनामे	—रामबाबू	१० रुपये
नन्हा राजकुमार	—ऑतुआन द सैंतेक्जूपेरी	१५ रुपये
अनुराग के दो खूबसूरत बाल कविता पोस्टर		(प्रत्येक ५ रुपये)

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक
जनचेतना, डी-६८, निरालानगर, लखनऊ-२२६०२०
जनचेतना, ९८९, पुराना कटरा, मनमोहन पार्क, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
जनचेतना, ८१, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार फेज-१, दिल्ली-११००९१